लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 48

भीमाम्बेडकरशतकम्

Bhīmāmbedkaraśatakaü

सुगतकविरत्नस्य शान्तिभिक्षुशास्त्रिणः

Sugatakaviratnasya Śāntibhikṣuśāstriṇaḥ

(प्रस्तावना-हिन्द्यनुवाद-टिप्पणि-परिशिष्टादिभिरलंकृतम्)

Edited By

Dr. Priya Sen Singh

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्

(मानित विश्वविद्यालयः)

नवदेहली

प्रकाशकः
कुल-सचिवः,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्
(मानित विश्वविद्यालयः)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058
ईपीएबीएक्स : 28524993, 28521994, 28524995
तार : संस्थान
ई मेल : rsks@nda.vsnl.net.in
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

© संस्थान

संस्करण : 2012

मूल्यम् : रु. 100.00

ISBN : 978-93-82091-08-0

मुद्रकः
डी.वी. प्रिंटर्स
97-यू.बी. जवाहर नगर, दिल्ली-110007

पुरोवाक्

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर पर संस्कृत भाषा में अनेक रचनाएँ लिखी गई हैं। इनमें दो उत्कृष्ट महाकाव्य उल्लेखनीय हैं- अम्बेडकरदर्शनम् (रचयिता-बलदेव मेहरा) तथा भीमायनम् (रचयिता-प्रभाशंकर जोशी)। इसी कड़ी में प्रस्तुत काव्य प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता है। इस काव्य के प्रणेता सुगतकविरत्न शान्तिभिक्षु शास्त्री एक जाने-माने बौद्ध विद्वान् हुए हैं जिनकी प्रतिभा को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से प्रकाशित बुद्धोदयकाव्य को देख कर ही जाना जा सकता है।

आधुनिक भारत में बौद्ध धर्म के पुनर्जागरण में आम्बेडकर का योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता। आज भारत में जितने भी बौद्ध अनुयायी हैं उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में तिब्बती बौद्ध धर्म के अनुयायी आते हैं जो या तो दलाई लामा के साथ तिब्बत से आये या उनकी अगली पीढ़ी के हैं अथवा भारत के उत्तर में लद्दाख में या उत्तर पूर्वी भारत के प्रान्तो में बसने वाले बौद्ध हैं जो परम्परागत रूप से तिब्बती बौद्ध धर्म से सम्बद्ध हैं। दूसरा वर्ग उन नव-बौद्धों का है जो बाबा साहब डॉ आम्बेडकर जैसे समाज सुधारकों के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म की ओर झुके। यह सच है कि डॉ. आम्बेडकर इस आंदोलन के जनक नहीं थे किन्तु उनकी ही प्रेरणा से भारत के दलित वर्ग का एक बड़ा अंश आज बौद्ध धर्म मतावलम्बी है।

जिस 'सामाजिक संलग्न बौद्ध धर्म' की आज सम्पूर्ण जगत् में धूम सुनाई देती है भारत में उसके पुरोधा तो कम से कम डॉ. आम्बेडकर ही रहे हैं। भीमराव आम्बेडकर के नाम व कार्यों की पूर्ण अभिव्यक्ति इस रचना से हो सकेगी ऐसा मेरा अनुमान है।

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोयडा के स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट् स्टडीज् एण्ड सिविलाईजेशन में सहायक आचार्य के पद पर कार्य कर रहे डॉ. प्रियसेन सिंह ने हमारे राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में विकास अधिकारी (पालि) के पद पर कार्य करते हुए आचार्य नागार्जुनकृत सुहृल्लेख के संपादन का कार्य किया है जिसे संस्थान ने ही प्रकाशित किया है। संस्थान से प्रकाशित होने वाली यह उनकी दूसरी रचना है जो सराहनीय है और जिसके लिये मैं उन्हें साधुवाद देता हूँ। संस्थान ने सदैव ही नव-सृजन को प्रोत्साहित किया है और संस्कृत जगत् में रचे जाने वाले विभिन्न विषयों को समाहित किया है।

आशा है कि डॉ. प्रियसेन सिंह का यह प्रयास डॉ. भीमराव अम्बेडकर के साहित्य तथा कृतित्व को संस्कृत समाज में और भी ग्राह्य बनाने में सहायक होगा।

राधावल्लभ त्रिपाठी

प्रस्तावना

भीमाम्बेडकरशतक की रचना सुगतकविरत्न शान्तिभिक्षु शास्त्री ने 1990 ईसवी वर्ष में की थी। उन्होंने अपने इस ग्रन्थ की पुष्पिका में वह तिथि भी दर्ज कर दी है, जिस तिथि को इस ग्रन्थ का लेखन समाप्त हुआ था और वह तिथि थी ईसवीय 21 नवम्बर 1990 (21/11/1990)। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है कि डॉ0 शास्त्री ने ग्रन्थ लेखन की निश्चित तिथि दी हुई है, वस्तुतः इस माने में वे बहुत ही सजग थे कि इस प्रकार की छोटी-छोटी सूचनाऐं भी कालान्तर में बड़ी महत्त्वपूर्ण साबित होती हैं।

महामान्य ग्रन्थकार इस शतक-ग्रन्थ का शीर्षक क्या रखना चाहते थे, यह बात अभी भी रहस्यमय है। इस समय उनकी एकमात्र वारिस (दायधारिणी) डॉ0 (श्रीमती) बोधिश्री ने जो पांडुलिपि संशोधन-संपादन-प्रकाशन के लिये दी, उसके मुख्यपृष्ठ पर भीमशतकम् भी लिखा है और उसके नीचे अम्बेडकरशतकम् भी लिखा है और फिर दोनों शीर्षकों को क्रास भी किया गया है अर्थात् काटा भी गया है। संभवतः प्रो0 शास्त्री को इस ग्रन्थरत्न के लिये इनके अलावा किसी अन्य शीर्षक की तलाश थी और बाद में इस बात को भूल गये और ग्रन्थ बिना शीर्षक के ही रह गया। जब ग्रन्थ की पांडुलिपि मुझे दी गई तो मेरे सामने समस्या उपस्थित हो गई कि मैं उन दोनों शीर्षकों में से कौन सा शीर्षक दूँ। मैंने इस बात पर पूरा सोच-विचार किया और इस नतीजे पर पहुँचा कि दोनों शीर्षकों का एक मिला-जुला रूप बनाया जाय, जो सरल-सुबोध होने के साथ ही साथ अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी पूर्ण हो -- अतः भीमाम्बेडकरशतकम्। इससे परिनिब्बुत भीमराव

आम्बेडकर के नाम व कार्यों की पूर्ण अभिव्यक्ति हो सकेगी। इन दोनों नामों में से किसी एक को रखना अर्ध-अभिव्यक्ति ही होगी, पूर्ण नहीं। क्योंकि इतिहास में भीम नाम से कई नायक हो चुके हैं, उनमें से सबसे प्रसिद्ध पाण्डव भीम थे। उनके नाम पर तो आजकल बच्चों को रिझाने के लिये टेलिविजन पर एक सीरियल चल रहा है, जिसमें कपोल-कल्पित चमत्कारिक कहानियाँ ही दी गई हैं, जो बातें महान् तार्किक, न्यायपण्डित भीमराव आम्बेडकर के व्यक्तित्व के सर्वथा प्रतिकूल हैं। दूसरी तरफ आम्बेडकर तो वे इसलिये कहलाये, क्योंकि यह नाम उन्होंने अपने शिक्षक से लिया था जो आम्बेड नामक गाँव के रहने वाले थे। इसके अलावा 'आम्बेडकर' सरनेम आज बहुत ही प्रचलित हो गया है, बाबा साहेब के परिवार के लोगों के अलावा अन्य नवयुवक यह सरनेम (उपनाम) रख कर अपने को गौरवान्वित कर रहे हैं, यहाँ तक कि उत्तरप्रदेश जैसे राज्य में जहाँ यह सरनेम बेगाना सा लगता है। आम्बेडकरशतकम् शीर्षक रखे जाने पर प्रश्न उठेगा कि किस आम्बेडकर के नाम पर यह शतक उसी तरह जैसे भीम के नाम पर प्रश्न उठता है कि कौन से भीम के नाम पर। इस प्रकार यह आवश्यक हो गया है कि ग्रन्थ का ऐसा नाम दिया जाय जो बाबासाहेब के व्यक्तित्व को उजागर करे किसी अन्य के व्यक्तित्व को नहीं। अतः मिला-जुला नाम 'भीमाम्बेडकरशतकम्'।

परमपूज्य बाबासाहेब डॉ0 भीमराव रामजी आम्बडेकर के नाम के साथ एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य जुड़ा हुआ है। पिछली ईसवीय सदी के द्वितीय दशाब्दी के प्रारंभ में (प्रायः 1920-25 ई0 के आसपास) हमारे देश के अधिकांश भागों में एक प्रकार की नवजागरण की लहर फैली (इसके कई ऐतिहासिक कारण थे, जिनमें प्रमुख था योरोप में हुई औद्योगिक क्रान्ति का सीधा असर)। यह वही काल है, जब समाज के पिछड़े और सदियों से उपेक्षित लोगों में जागरण की लहर आई। सिक्खों ने अपने इतिहास को खँगाला और गुरूसिंहसभाओं की स्थापनाऐं हुईं, उन्होंने गुरूद्वारों को ब्राह्मण पुजारियों के चंगुल से

छुड़ाया, हिन्दुओं की पिछड़ी जातियों में यह ललक पैदा हुई कि वे अपनी-अपनी जातियों को उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत करें। इस नव जागरण में महाराष्ट्र में महामना ज्योतिबा राव फुले, उत्तर-पश्चिम भाग में स्वामी दयानन्द सरस्वती, उत्तरप्रदेश में स्वामी बोधानन्द आदि का महान् योगदान रहा है। यह वही काल है, जब ब्राह्मणों द्वारा शूद्र घोषित जाट, अहीर, कुणबी (कुर्मी), क्योरी (कोरी) आदि जातियों के नेताओं ने अपनी अपनी जातियों को क्षत्रिय घोषित किया, यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करना प्रारंभ किया, आदि-आदि। बाबासाहेब के नाम में जुड़ा 'भीमराव' शब्द का यही मर्म है। बाबासाहेब अपनी 'महार' जाति को नागवंशी (विस्तार के लिये देखिये उनकी पुस्तक 'हू वर शूद्राज़) मानते थे और यह दावा करते थे कि नागवंशी लोग पूर्वकाल में (आर्यों के आधिपत्य के पहले) भारत के अधिकांश क्षेत्रों में शासक थे। उदाहरण के तौर पर गौतम बुद्ध के समकालीन बिम्बिसार, अजातशत्रु आदि शासक नागवंशी ही थे। इसके अलावा 'रामजी' उनके आदरणीय पिता जी का नाम था, जो धार्मिक विचार में कबीरपंथी थे। चूँकि महाराष्ट्र में यह परिपाटी थी (और आज भी है) कि प्रत्येक व्यक्ति अपने नाम के साथ अपने पिता का नाम और अपने गोत्र का नाम अवश्य जोड़ता था, अत: बाबासाहेब का पूरा नाम पड़ा भीमराव रामजी आम्बेडकर। यहाँ गोत्र नाम तो बाबासाहेब ने अपने शिक्षक से लिया था (जैसा पहले बताया गया है) और भीम नाम माँ भीमाबाई से पड़ा। भीम शब्द के साथ 'राव' का प्रयोग उपरिलिखित नवजागरण के प्रभाव से आया। फलत: वे इतिहास में भीमराव रामजी आम्बेडकर के नाम से प्रसिद्ध हुये।

प्रस्तुत शतक काव्य प्रो0 शास्त्री के उन काव्यों की श्रृंखला में आता है, जो अत्यधिक प्रसिद्धि पा चुके हैं विशेषकर बुद्धविजय काव्य। बुद्धविजय महाकाव्य भगवान् बुद्ध के जीवन-चरित और उनके उदान्त सिद्धान्तों को आधार बना कर लिखा गया है। उसे संस्कृत जगत् में पर्याप्त प्रसिद्धि मिली और भारत सरकार ने उस पर साहित्य

अकादमी पुरस्कार दिया। उनका दूसरा महाकाव्य है अशोकाभ्युदय (महाकाव्य)। इन दोनों महाकाव्यों के पहले प्रो0 शास्त्री ने कई खंडकाव्य लिखे, जिनमें अत्यधिक चर्चित हुआ बुद्धोदयकाव्य, जिसका दूसरा संस्करण निकाला राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने। उस श्रृंखला में प्रस्तुत काव्य एक शतक खंडकाव्य है। डॉ0 भीमराव रामजी आंबेडकर का जीवन-वृत्त, विचार और कृतित्व इसके वर्ण्य विषय हैं।

प्रो0 शास्त्री ने इसे बड़ी सरल संस्कृत में लिखा है, ताकि सामान्य संस्कृत से परिचित व्यक्ति भी इसका रसास्वादन कर सके। इसे प्राचीन लिपिकर परंपरा में लिखा गया है, जहाँ अनुनासिक वर्णों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया है। जैसे गङ्गा के स्थान पर गंगा, चञ्चल के स्थान पर चंचल, चाण्डाल के स्थान पर चांडाल, परम्परा के स्थान पर परंपरा आदि। स्थान-स्थान पर संयुक्त वर्णों को तोड़ कर रखा गया है यथा सम्यक्तया के स्थान पर सम्यक्तया आदि। इस प्रकार के प्रयोग के पीछे एक ही उद्देश्य है और वह यह कि संस्कृत को यथा संभव सरल बना कर प्रस्तुत किया जा सके ताकि सामान्यजन भी इसे पढ़ कर समझ सकें।

बाबा साहेब डॉ0 भीमराव आंबेडकर कर जीवन वृत्त अथाह सागर है। इस पर अनेक ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। संस्कृत में भी कई काव्य लिखे जा चुके हैं। प्रो0 शास्त्री ने उस महान् विचारक के अवदानों के अभिनन्दन में यह खंडकाव्य लिखा है। यही कारण है कि बाबा साहेब के जीवन और कृतित्व के कुछ खास बिन्दुओं पर ही प्रकाश डाला गया है। प्रो0 शास्त्री की दृष्टि में बाबा साहेब का त्रिरत्नशरण (बुद्ध, धम्म और संघ) ग्रहण सबसे महत्वपूर्ण घटना है, इसीलिये काव्य के अन्त में बाबा साहेब का जयकारा करते हुये लिखते हैं --

जय भीम महाभाग त्रिरत्नशरणंगत।

जयो स्तु सततं तेषां ये भवन्ति तवानंगा:।।

आशा है पाठकवृन्द इस ग्रन्थ का समुचित अभिनन्दन करेंगे,

यद्यपि इसके छपने में अत्यधिक विलंब हुआ। प्रो0 शास्त्री की कृतियों को सहेज कर रखने वाली उनकी एकमात्र वारिय उनकी पुत्री हैं। मैं उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे सम्पादन के कार्य के लिए योग्य समझा और मुझे यह कार्य सौंपा। मैंने इसे ग्रन्थालोचन पद्धति की बारीकियों को ध्यान में रख कर संपादित करने का प्रयास किया। इसकी सफलता का आकलन तो विद्धान ही करेंगे।

संपादन का कार्य पूरा करने में मुझे जिन मित्रों व सहयोगियों एवं मेरे परिवार के सदस्यों का सहयोग तथा सहायता मिली उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रियसेन सिंह

भीम-दानम्

(बौद्ध-संस्कृते लिखितम्)

बुद्ध-पुत्रं महाभागमाम्बेडकर-नामकम्।
बोधिसत्त्वं च सप्राप्य भारतं भा-रतं गतम्॥

संत्रस्ता दलिता लोकाः क्षेत्रे क्षेत्रे पथे पथे।
याचमाना विलोकेन्ति देहि मां देहि मामिति॥

दतं च भीमकैस्तत्र तेषां हस्तेषु सादरम्।
एकस्मिन् क्षुच्छमं चूर्णमन्यत्र धर्म-मसनदम्।

(संघसेनस्य)

भारत (देश) बुद्ध-पुत्र महाभाग आंबेडकर नामक बोधिसत्त्व को पाकर भा-रत (प्रकाश-युक्त) हो गया।

खेतों-खेतों व रास्तों-रास्तों (फुटपाथों) में पड़े दलित पीड़ित लोग 'मुझे दो' 'मुझे दो' कहकर (कुछ) मांगते हुये (भीमराव आंबेडकर की तरफ) टक-टकी लगाये देख रहे हैं।

भीम ने बड़े अदब से उनके हाथों पर दिया -- एक पर भूख मारक-चूरन (फांकने के लिये) और दूसरे पर सम्मानार्थ धर्म।

(संघसेन-लिखित)

Brief-Biography of Bhimarao Ramji Ambedkar

Bhimrao Ramji Ambedkar was born on the 14th April, 1891 at Mhow (Army Headquarter of War) in Indore district of Madhya Pradesh. His father, Ramjirao was a Subedar in the army. His grandfather, Maloji was also in military service. His father got retirement from the military service in 1891 with a pension of rupees fifty per month and left Mhow. Ambedkar's father had fourteen children and Ambedkar was the youngest one. Bhimabai was the mother of Bhimrao, who died in 1896. His aunt Mirabai took care of him and filled the gap of mother. His father was an admirer of Mahatma Phooley and Sufi Sant Kabir.

After attaining the age of five, Bhimrao was sent to Maratha School in Depoli. His father got re-employment at Depoli from where he was transfered to Satara. In the year 1900 Bhimrao got admission in Govt. High School, Satara. His school name was Bhimrao Ramji Ambavadekar. Bhimrao too Ambedkar title from his teacher, whose name was Ambedkar.

In 1904, his father's service was terminated. He shifted to Bombay. Ambedkar was in the fourth standard at that time. He took admission in Elphinston Government High School, Bombay. Ambedkar got married to Ramabai, when he was fourteen years old and was studying in the fifth standard. In 1907, he passed his Matriculation examination. At that time a congratiulatory meeting was arranged by the leaders of Satya Shodhak Movement. They presented him a book on the life of Gautama Buddha.

Ambedkar impressed Maharaja Sayajirao Gaekwad of Baroda, who awarded him a scholarship of rupees twentyfive per month. In 1912, his son Yashwant was born. Ambedkar passed his B.A. Examination in 1913. On the 2nd February, 1913 his father expired. It was a major shock to Ambedkar, as his father had sacrificed a lot to provide him with education and had to incur debts.

भीमराव रामजी अम्बेडकर का संक्षिप्त जीवन-वृत्त

भीमराव रामजी आम्बेडकर का जन्म मध्यप्रदेश के इंदौर जिले के महू (युद्ध के सेना मुख्यालय) में 14 अप्रैल, 1891 को हुआ था। उनके पिता, रामजीराव सेना में एक सूबेदार थे। उनके दादा, मलोजी भी सैन्य सेवा में थे। उनके पिता को 1891 में सैन्य सेवा से पचास रूपये प्रति माह पेंशन सहित सेवानिवृत्ति मिली और उन्होंने महू छोड़ दिया। आम्बेडकर के पिता की चौदह सन्तानें थीं और आम्बेडकर उनमें सबसे छोटे थे। भीमाबाई भीमराव की माता थीं, जिनकी मृत्यु 1896 में हो गई। उनकी बुआ मीराबाई ने उनकी देखभाल की और उन्हें माता की कमी अनुभव न होने दी। उनके पिता महात्मा फुले व सूफी सन्त कबीर के प्रशंसक थे।

पॉंच वर्ष की आयु अर्जित करने के पश्चात्, भीमराव को देपोलि में मराठा स्कूल में भेजा गया था। उनके पिता को देपोलि में पुन:रोजगाार मिल गया और वहां से उन्हें सतारा स्थानांतरित किया गया था। सन् 1990 में भीमराव को सरकारी हाई स्कूल, सतारा में दाखिला मिल गया। उनका स्कूल का नाम भीमराव रामजी अम्बावाडेकर था। भीमराव ने उपनाम अपने शिक्षक से ग्रहण किया, जिनका नाम आम्बेडकर था।

सन् 1904 में, उनके पिता की सेवा समाप्त कर दी गयी। वे बम्बई स्थानांतरित हो गये। उस समय आम्बेडकर चौथी कक्षा में थे। उन्होंने एलफिन्स्टोन सरकारी हाई स्कूल, बम्बई में दाखिला लिया। आम्बेडकर का विवाह रमाबाई से हो गया, जब वे चौदह वर्ष के थे और पांचवी कक्षा में पढ़ते थे। सन् 1907 में उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। उस समय सत्य शोधक आंदोलन के नेताओं द्वारा एक बधाई सभा का आयोजन किया गया था। उन्होंने उन्हें गौतम बुद्ध के जीवन पर एक पुस्तक भेंट की।

आम्बेडकर ने बडौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड को प्रभावित किया, जिन्होंने उन्हें पच्चीस रूपये प्रति माह की छात्रवृत्ति से सम्मानित किया। सन् 1912 में, उनके पुत्र यशवंत का जन्म हुआ था। सन् 1913 में आम्बेडकर ने अपनी स्नातक (बी0ए0) की परीक्षा उत्तीर्ण की। 2 फरवरी, 1913 को उनके पिता का निधन हो गया। आम्बेडकर के लिये यह एक बड़ा सदमा था, क्योंकि उन्हें शिक्षा प्रदान करने के लिये उनके पिता ने बहुत कुछ बलिदान किया था और यहां तक कि उन्हें कर्ज भी उठाना पड़ा था।

On the 4th June, 1913, a service agreement between Ambedkar and Maharaja Sayajirao was signed with the stipulation that he would serve the Baroda State after his study. In the third week of July, 1913, he left India and joined Columbia University, U.S.A. with the Gaekwad scholarship. He was the first Mahar untouchable to study in a foreign University. He was very studious. It is said, he used to study sixteen hours a day.

In June, 1915 Ambedkar obtained his M.A. degree on his thesis entitled 'Ancient Indian Commerce'. In May, 1916 he presented a paper on 'The Castes in India, Thier Mechanism, Genesis and Development' in the Anthropology seminar of Golden Weiser. According to him endogamy is the essence of castes. In June, 1916 he submitted his thesis for the degree of Ph.D., entitled 'National Divident for India: A Historical and Analytical Study'. It was published eight years later under the title, 'The Evolution of Provincial Finance in British India'. After submission of his Ph.D. thesis, he left Columbia University to join London School of Eco-nomics and Political Science. In October, 1916 he got admission in the Gray's Inn for Law. Due to the expiry of the Maharaja Sayarirao scholarship, he returned home after spending a year in London working on a thesis for M.Sc. (Eco.) degree.

In July 1917, Ambedkar was appointed Military Secretary to the Maharaja of Baroda. He saw the ugly practice of caste system in its fullest operation. He was not allowed even to have drinking water in the office. He left Baroda on account of the ill-treatment meted out to him. He returned to Bombay in November 1917. In November 1918, he got Lecturership of Political Economy in Sydeneham College, Bombay. The high-caste Teachers objected to his drinking water from the pot reserved for the professional staff. He remained in the College from 11th November, 1918 to 11th November, 1920 and resigned from his post to resume his studies in Law and Economics in London. On the 31st January, 1920 he started a weekly named 'Mook-nayak' to champion the cause of the depressed classes

4 जून, सन् 1913 को, आम्बेडकर और महाराजा सयाजीराव के बीच इस शर्त के साथ सेवा समझौते पर हस्ताक्षर किये गये थे कि वे अपने अध्ययन के बाद बड़ौदा राज्य की सेवा करेंगे। जुलाई 1913 के तीसरे सप्ताह में, उन्होंने भारत छोड़ दिया और गायकवाड छात्रवृत्ति के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में दाखिल ले लिया। वे एक विदेशी विश्वविद्यालय में अध्ययन करने वाले पहले महार अछूत थे। वे बड़े पढ़ाकू थे। ऐसा कहा जाता है कि वे एक दिन में सोलह घन्टे अध्ययन करते थे।

जून 1915 में आम्बेडकर ने 'प्राचीन भारतीय वाणिज्य' नामक अपने शोध-ग्रंथ पर एम0ए0 की डिग्री अर्जित की। मई 1916 में उन्होंने गोल्डन वेसर की मानव-विज्ञान संगोष्ठी में 'भारत में जातियां, उनका तंत्र, उत्पत्ति और विकास' शीर्षक से एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार सगोत्र विवाह जातियों का सार है। जून 1916 में उन्होंने 'भारत के लिये राष्ट्रिय लाभांश: एक ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन' शीर्षक से अपना शोध प्रबंध पीएच0डी0 उपाधि के लिये प्रस्तुत किया। आठ वर्ष पश्चात् यह 'ब्रिट्रिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास' नाम से प्रकाशित हुआ था। अपने शोध प्रबंध को जमा करने के उपरान्त उन्होंने अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान के लंदन स्कूल में दाखिले के लिये कोलम्बिया विश्वविद्यालय को छोड़ दिया। अक्टूबर 1916 में उन्हें कानून के ग्रेज इन में प्रवेश मिल गया। महाराजा सयाजीराव छात्रवृत्ति की अवधि समाप्त होने के कारण, वे लंदन में विज्ञान परास्नातक (अर्थशास्त्र) के शोध प्रबंध पर एक वर्ष तक कार्य करने के पश्चात् घर लौट आये।

जुलाई 1917 में, आम्बेडकर बडौदा के महाराजा के सैन्य सचिव नियुक्त किये गये थे। उन्होंने जाति व्यवस्था के बदसूरत चेहरे को उसके पूरे स्वरूप में देखा। उन्हें कार्यालय में पीने के पानी की भी अनुमति नहीं थी। उन्होंने अपने साथ हुए दुर्व्यहार के कारण बडौदा छोड़ दिया। वे नवम्बर 1917 में बम्बई लौट आए। नवम्बर 1918 में उन्हें स्यडेनएहम कॉलेज में राजनैतिक अर्थव्यवस्था के व्याख्याता का पद मिल गया। उच्च जाति के व्याख्याताओं ने पेशेवर कर्मचारियों के लिये आरक्षित बर्तन से उनके पानी पीने पर आपति की। वे 11 नवम्बर, 1918 से 11 नवम्बर, 1920 तक कॉलेज में बने रहे और तत्पश्चात् लंदन में विधि एवं अर्थशास्त्र के अपने अध्ययन को पुन: प्रारम्भ करने के लिए उन्होंने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। 31 जनवरी सन् 1920 को उन्होंने भारत में दलित वर्गों के उदेश्य को समर्थन देने के लिये 'मूक-नायक' नाम से एक

in India. He attended the Depressed Classes Conferences which were held at Nagpur in 1918 and at Kolhapur on March 21, 1920 under the Presidentship of Sahu Maharaja.

In September, 1920 Ambedkar rejoined the London School of Economics and Political Science. He qualified for the degree of Barister-at-law from the Gray's Inn, London. He refused the proposal of Sahu Maharaja regarding protection and maintenace of Ramabai, but, however, he accepted the assistance from him. In June, 1921 he got the degree of M.Sc. (Economics) on the thesis entitled 'Provincial Centralization of Imperial Finance in British India'. In March, 1923 he was awarded D.Sc. (Eco-nomics) degree on 'The Problem of the Rupee'. In May, 1947 the book was published under the title, 'History of Indian Currency and Banking', Vol. I. In April, 1923 he met E.S.Montague, Secretary of State for India and Vithalbhai Patel and discussed the grievances of the untouchables in India.

In June, 1923 Ambedkar started legal practice in the High Cour of Jiudicature, Bombay. Subsequently he left the practice and became the Lecturer of Mercantile Law at Batliboi's Account-ancy Institute on part-time basis for three years. On the 9th March, 1924 he organized a meeting at the Damodar Hall, Bombay to discuss the problems of depressed classes. On the 2nd July, 1924 he formed a Bahishkrit Hitakarini Sabha to spread education, improve economic conditions and air the grievances of the depressed classes. On the 3rd April, 1927 he started a newspaper named 'Bahishkrit Bharat'. He launched a Satyagraha at Mahad for temple entry. In 1926, he gave evidence before the Royal Commission on Currency and Finance. In 1927, he was nominated to the Bombay Legislative Council alongwith Dr. Solanki. In 1928, he became a Lecturer in Government Law College, Bombay. In the same year, he demanded seperate electorate for the untouchables before Simon Commission.

In November 1930, the First Round Table Conference was held in London to which Ambedkar was invited as a representative

साप्ताहिक शुरू किया। उन्होंने साहू महाराज की अध्यक्षता में सन् 1918 में नागपुर में और मार्च 21, 1920 को कोल्हापुर में आयोजित दलित वर्गों के सम्मेलन में भाग लिया।

सितम्बर 1920 में आम्बेडकर ने अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान के लंदन स्कूल में पुनः दाखिला ले लिया। उन्होंने लंदन के ग्रेज इन से विधि की उपाधि के लिये अर्हता प्राप्त की। उन्होंने रमाबाई के संरक्षण और भरण-पोषण से संबंधित साहू महाराज के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था, किन्तु, तथापि, उन्होंने उनसे सहायता स्वीकार कर ली थी। जून 1921 में उन्होंने 'ब्रिट्रिश भारत में राजसी वित्त का प्रांतीय केंद्रीकरण' नामक शोध प्रबंध पर विज्ञान परास्नातक (अर्थशास्त्र) की उपाधि अर्जित की। मार्च 1923 में, उन्हें 'रूपये की समस्या' विषय पर डी0एससी0 (अर्थशास्त्र) की उपाधि से सम्मानित किया गया था। मई 1947 में यह शोध प्रबंध 'भारतीय मुद्रा एवं बैंकिग का इतिहास' खण्ड एक के नाम से प्रकाशित हुआ था। अप्रैल 1923 में उन्होंने भारत के राज्य सचिव ई0 एस0 मोन्टग एवं विटठ्लभाई पटेल से मुलाकात की और भारत में अछूतों की शिकायतों पा विचार-विमर्श किया।

जून 1923 में आम्बेडकर ने उच्च न्यायाधिकरण, बम्बई में कानूनी अभ्यास प्रारम्भ कर दिया। तदनंतर उन्होंने अभ्यास छोड़ दिया और तीन वर्ष के लिये अंशकालिक आधार पर बाटलिबोई एकाउन्टेन्सी संस्थान में व्यापारिक कानून के व्याख्याता बन गये। 9 मार्च 1924 को उन्होंने दलित वर्गों की समस्याओं पर चर्चा करने के लिये बम्बई के दामोदर सभागार पर एक बैठक आयोजित की। 2 जुलाई 1924 को उन्होंने दलित वर्गों में शिक्षा के प्रसार, आर्थिक स्थिति में सुधार एवं शिकायतों को सुनने के लिये बहिष्कृत हितकारिणी सभा का गठन किया। 3 अप्रैल 1927 को उन्होंने 'बहिष्कृत भारत' नामक एक समाचार-पत्र प्रारम्भ किया। उन्होंने महाड में मन्दिर में प्रवेश के लिये सत्याग्रह शुरू किया। 1926 में, उन्होंने मुद्रा एवं वित्त पर बने राजसी आयोग के समक्ष साक्ष्य दिया। 1927 में, उन्हें डॉ सोलंकी सहित बम्बई विधान परिषद के लिये नामांकित किया गया था। 1928 में, वे बम्बई के सरकारी लॉ कालेज में एक व्याख्याता बन गये। उसी वर्ष में, उन्होंने साइमन आयोग के समक्ष अछूतों के लिये पृथक निर्वाचन-क्षेत्र की मांग की।

नवम्बर 1930 में, प्रथम गोलमेज सम्मेलन लंदन में आयोजित किया गया था जिसमें आम्बेडकर को अछूतों के एक प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित

of the untouchables. In the Second Round Table Conference which was held in London from August 1931 to December 1931, Gandhi claimed the leadership of the untouchables which Ambedkar opposed. In August 1932, Ramsay Macdonald published his communal award giving seperate electorate to the untouchables. Gandhi opposed it and launched a fast unto death to get it stopped. Consequently on the 24th September, 1932 Ambedkar signed the 'Poona-Pact' with Gandhi. Ambedkar became a member of the Joint Parliamentary Committee on the Constitutional Reforms in 1932 and remained in that capacity till 1934. He attended the Third Round Table Conference in London in 1932-33.

In June, 1935 Ambedkar was appointed Principal and Perry Professor of Jurisprudence in the Government Law College, Bombay. On October 13, 1935 a provincial conference of the depressed classes was held at Yeola, Nasik under the President-ship of Ambedkar, in which he declared that he was born as a Hindu, but he would not die a Hindu. In December, 1935 the Jat-Pat Todak Mandal of Lahore invited him to preside over their annual conference. In January 1936, Jagjivan Ram alongwith some prominent workers met Ambedkar for the first time in Bombay on the issue of religious conversion. On the 30th May, 1936 he addressed the Bombay Presidency Mahar Conference and advocated renunciation of Hinduism. He was nominated to Bombay Legislature by the Governor.

Ambedkar formed Independent Labour Party under the Government of India Act, 1935. The party contested 17 seats for Bombay Legislature and secured 15 seats. In August, 1937 he introduced Kholi and Abolition of Mahad Watan Bill. In 1938, the Congress Party introduced a Bill, whereby they wanted to change the untouchables' nomenclature to 'Harijan'. Ambedkar opposed the Bill. In July, 1942 he was appointed as a Labour member to the Executive Council of the Governor General of India and continued in that capacity till July 1946. In November, 1946 he was elected to the

किया गया था। द्वितिय गोलमेज सम्मेलन में जो लंदन में अगस्त 1931 से दिसम्बर तक आयोजित किया गया था, गांधी जी ने अछूतों के नेतृत्त्व का दावा किया था जिसका आम्बेडकर ने विरोध किया। अगस्त 1932 में रामसे मैकडोन्लड ने अछूतों को पृथक् निर्वाचन-क्षेत्र प्रदान करते हुए अपना सांप्रदायिक पंचाट प्रकाशित किया था। गांधी जी ने इसका विरोध किया और एक मृत्युपर्यन्त उपवास प्रारम्भ कर दिया और इसे रुकवा दिया। नतीजतन 24 सितम्बर 1932 को आम्बेडकर ने गांधी जी के साथ 'पूना पैक्ट' पर हस्ताक्षर किये। सन् 1932 में आम्बेडकर संवैधानिक सुधारों पर बनी संयुक्त संसदीय समिति के एक सदस्य बने और 1934 तक उसी क्षमता पर बने रहे। उन्होंने सन् 1932-33 में लंदन में तृतीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।

जून 1935 में आम्बेडकर बम्बई के सरकारी लॉ कालेज में प्रधानाचार्य एवं न्यायशास्त्र के पेरी प्रोफेसर नियुक्त किये गये। 13 अक्टूबर 1935 को आम्बेडकर की अध्यक्षता में नासिक के येओला में दलित वर्गों का एक प्रांतीय सम्मेलन आयोजित हुआ था, जिसमें उन्होंने यह घोषणा की कि वह एक हिन्दू के रूप में पैदा हुए थे, किन्तु वह एक हिन्दू के रूप में नहीं मरेंगे। दिसम्बर 1935 में लाहौर के जात-पात तोड़क मण्डल ने अपने वार्षिक सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये उन्हें आमंत्रित किया। जनवरी 1936 में जगजीवन राम ने कुछ अन्य प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ बम्बई में पहली बार धर्मान्तरण के मुद्दे पर आम्बेडकर से मुलाकात की। 30 मई 1936 को उन्होंने बम्बई प्रेसीडेंसी महार सम्मेलन को संबोधित किया और हिन्दू धर्म के परित्याग की वकालत की। वे राज्यपाल द्वारा बम्बई विधान-मंडल के लिये नामांकित किये गये थे।

आम्बेडकर ने भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत स्वतंत्र लेबर पार्टी का गठन किया। पार्टी ने बम्बई विधान मंडल के लिये 17 सीटों पर चुनाव लड़ा और 15 सीटें जीत लीं। अगस्त 1937 में उन्होंने खोली एवं महार वतन विधेयक के उन्मूलन का प्रस्ताव रखा। सन् 1938 में कांग्रेस पार्टी ने एक विधेयक प्रस्तुत किया, जिसके द्वारा वे 'अछूत' शब्द को 'हरिजन' शब्द से बदलना चाहते थे। आम्बेडकर ने विधेयक का विरोध किया। जुलाई 1942 में, उन्हें भारत के गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद के लिये लेबर सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया और वे उस क्षमता में जुलाई 1946 तक बने रहे।

Constituent Assembly from Bengal. In August, 1947 Ambedkar was elected Chairman of the Drafting Committee for the preparation of the Constitution of India.

On the 15th August, 1947 India got the independence and Jawaharlal Nehru became the first Prime Minister. Ambedkar joined the Cabinet as Minister of Law. On the 25th September, 1951 Ambedkar resigned from the Nehru Cabinet on the issue of government apathy towards the Scheduled Castes and on the differences with the Cabinet on India's Foreign Policy and the Hindu Code Bill. In 1948, Ambedkar got married with Dr. Sharada of Bombay who came to be known as Savita Ambedkar later. On the 27th November, 1949 Ambedkar presented the Constitution of India to the Government.

On June 5, 1949 Columbia University from where he had got Ph.D. degree 35 years earlier, conferred the degree of LL.D. on Ambedkar at its special convocation. The same year (1949), he addressed the World Buddhist Conference in Kathmandu, Nepal on 'Marxism versus Buddhism'. In December, 1950 he again attended the World Buddhist Conference in Sri Lanka. In July, 1951 he formed the Bharatiya Bauddha Janasangha. In September, 1951 he compiled a Buddhist Prayer Book named Upasana Path. He was nominated as a delegate to the World Buddhist Conference, Rangoon in 1954. In May, 1955 he founded the Bharatiya Bauddha Mahasabha.

On the 14th October, 1956 Ambedkar embraced Buddhism at a historic ceremony in Nagpur. More than half a million people followed him on the same occasion and millions koined his movement subsequently. In November, 1956 he attended the Conference of the World Fellowship of Buddhists in Kathmandu, Nepal as a deligate. On the 6th December, 1956 he breathed his last leaving behind his disciples and followers fully unprepared to take up the task of consolidation of his gigantic work

नवम्बर 1946 में वे बंगाल से संविधान सभा के लिये निर्वाचित किये गये। अगस्त 1947 में आम्बेडकर भारत के संविधान के निर्माण के लिये बनी मसौदा समिति के अध्यक्ष चुने गये।

15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और जवाहर लाल नेहरू प्रथम प्रधानमंत्री बने। आम्बेडकर कानून मंत्री के रूप में मंत्रिमंडल में शामिल हो गये। 25 सितम्बर, 1951 को आम्बेडकर ने अनुसूचित जातियों के प्रति सरकार की उदासीनता के मुद्दे पर और भारत की विदेश नीति एवं हिन्दू संहिता विधेयक पर मंत्रिमंडल के साथ मतभेदों पर नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। सन् 1948 में आम्बेडकर ने बम्बई की डॉ शारदा के साथ विवाह कर लिया जो बाद में सविता आम्बेडकर के नाम से जानी गयीं। 27 नवम्बर, 1949 को आम्बेडकर ने सरकार को भारत का संविधान प्रस्तुत किया।

5 जून, 1949 को कोलम्बिया विश्वविद्यालय ने जहां से 35 वर्ष पूर्व उन्होंने पीएच0डी0 की डिग्री प्राप्त की थी, आम्बेडकर को अपने विशेष दीक्षांत समारोह में विधि वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया। उसी वर्ष (1949), उन्होंने 'मार्क्सवाद बनाम बौद्ध धर्म' विषय पर काठमांडू, नेपाल में विश्व बौद्ध सम्मेलन को संबोधित किया। दिसम्बर 1950 में उन्होंने पुनः श्रीलंका में विश्व बौद्ध सम्मेलन में भाग लिया। जुलाई 1951 में उन्होंने भारतीय बौद्ध जनसंघ को गठन किया था। सितम्बर 1951 में उन्होंने 'उपासना पथ' नामक एक बौद्ध उपासना ग्रंथ को संकलित किया। सन् 1954 में उन्हें रंगून में हुए विश्व बौद्ध सम्मेलन में एक प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत किया गया था। मई 1955 में उन्होंने भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना की।

14 अक्टूबर 1956 को आम्बेडकर ने नागपुर में एक ऐतिहासिक समारोह में बौद्ध धर्म ग्रहण किया। 5 लाख से अधिक लोंगों ने उस अवसर पर उनका अनुसरण किया और लाखों लोग बाद में उनके आंदोलन में सम्मिलित हुए। नवम्बर 1956 में उन्होंने एक प्रतिनिधि के रूप में नेपाल में काठमांडू में बौद्धों के विश्व समागम में भाग लिया। 6 दिसम्बर 1956 को उन्होंने अपने भीमकाय कार्य के समेकन के भार को उठाने के लिये अपने अनुयायियों और शिष्यों को अपने पीछे अप्रस्तुत छोड़ कर अन्तिम सांसें लीं।

Life of Dr. B.R.Ambedkar at a Glance
(डॉ बी0आर0अम्बेडकर का जीवन एक दृष्टि में)

Birth (जन्म)	14th April, 1891
Ambedkar's father, Ramji retired from his service (आम्बेडकर के पिता रामजी अपनी सेवा से सेवानिवृत्त)	1891
Mother, Bhima Bai died (माता, भीमा बाई की मृत्यु)	1896
Married to Rama Bai (रमा बाई से विवाह)	1905
Passed Matric (मैट्रिक की परीक्षा उर्त्तीण)	1907
Passed B.A. (बी0ए0 की परीक्षा उर्त्तीण)	1913
Father expired (पिता की मृत्यु)	2nd July, 1913
Went to Columbia University to join M.A. (एमए0ए0 में प्रवेश के लिये कोलम्बिया विश्वविद्यालय गये)	July, 1913
Passed M.A. (एम0ए0 की परीक्षा उर्त्तीण)	June, 1915
Ph.D. Thesis Submitted (पीएच0डी0 शोधप्रबंध प्रस्तुत किया)	June, 1916
Took Admission in the Gray's Inn, London for Law (कानून की शिक्षा के लिये ग्रेज इन, लंदन में दाखिला लिया)	Oct., 1916
Appointed Military Secretary to Gaekwad (गायकवाड के सैन्य सचिव नियुक्त)	July, 1917
Appointed Lecturer in Sydeneham College, Bombay (स्येडेनहम कॉलेज, बम्बई में व्याख्याता नियुक्त)	11the Nov., 1918
Rejoined London School of Economics and Political Science (अर्थशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान के लंदन स्कूल में पुनः प्रवेश)	Sept., 1920
Award of Barister-at-Law degree (विधि वेता की उपाधि से सम्मानित)	1920
Passed M.Sc. (Economics) (अर्थशास्त्र से एम0एससी0 की परीक्षा उर्त्तीण)	June, 1921
D.Sc. (Economics) (अर्थशास्त्र से डी0एससी0 की परीक्षा उर्त्तीण)	March, 1923
Started Legal Practice (कानून का अभ्यास प्रारम्भ किया)	June, 1923
Formed Bahishkrit Hitkarini Sabha (बहिष्कृत हितकारी सभा का गठन)	2nd July, 1924

Gave evidence before Royal Commission 1926
(शाही आयोग के समक्ष साक्ष्य दिया)
Nominated to Legislative Council, Bombay 1927
(विधान परिषद, बम्बई के लिये मनोनीत)
Appointed Lecturer, Government Law College, Bombay 1928
(सरकारी लॉ कॉलेज में व्याख्याता नियुक्त)
Attended Ist Round Table Conference, London Nov., 1930
(लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया)
Attended 2nd Round Table Conference, London Aug., 1931
(लंदन में द्वितिय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया)
Poona Pact (पूना समझौता) 24th Sep., 1932
Appointed Member, Joint Parliamentary Committee on the Constitutional Reforms 1932
(संवैधानिक सुधारों पर संयुक्त संसदीय समिति में सदस्य नियुक्त)
Attended 3rd Round Table Conference, London 1932-33
(लंदन में तृतीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया)
His wife, Rama Bai expired 27th May, 1935
(उनकी पत्नि, रमा बाई का निधन)
Appointed Principal, Government Law College, Bombay 1st June, 1935
(सरकारी लॉ कॉलेज, बम्बई में प्रधानाचार्य नियुक्त)
Babu Jagjivan Ram met him for the first time Jan., 1935
(बाबू जगजीवन राम ने पहली बार उनसे भेंट की)
Formed Independent Labour Party 1936
(स्वतंत्र लेबर पार्टी का गठन)
Appointed as Labour Member to the Executive Council of the Governor General of India 2nd July, 1942
(भारत के गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद के लिये लेबर सदस्य के रूप में नियुक्त)
To England on a visit (एक यात्रा पर इंग्लैंड) Sept., 1946
Elected to the Constituent Assembly from Bengal Nov., 1946
(बंगाल से संविधान सभा कि लिये मनोनीत)
Appointed Minbister for Law (कानून मंत्री नियुक्त) 15th Aug., 1947

Elected Chairman of the Drafting Committee (मसौदा समिति के अध्यक्ष निर्वाचित)	29th Aug., 1947
Got re-married with Savita Ambedkar (सविता आम्बेडकर के साथ पुनर्विवाह)	1948
Presented Constitution of India to the Government (सरकार के समक्ष भारत का संविधान प्रस्तुत किया)	26th Nov., 1949
Attended World Buddhist Conference, Kathmandu (Nepal) (नेपाल, काठमांडू में विश्व बौद्ध सम्मेलन में भाग लिया)	1949-50
Formed Bharatiya Bauddha Janasangha (भारतीय बौद्ध जनसंघ का गठन किया)	July, 1951
Resignation from the Cabinet (मंत्रिमंडल से इस्तीफा)	25th Sept., 1951
Elected as a member of the Rajya Sabha (राज्य सभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित)	March, 1952
Attended World Buddhist Conference, Rangoon (Burma) (बर्मा, रंगून में विश्व बौद्ध सम्मेलन में भाग लिया)	Dec., 1954
Founded Bharatiya Bauddha Mahasabha (भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना की)	May, 1955
Embraced Buddhism (बौद्ध धर्म ग्रहण किया)	14th Oct., 1956
Founded Republican Party of India (भारतीय रिपब्लिकन पार्टी की स्थापना की)	30th Nov., 1956
Passed way (परिनिर्वाण हो गया)	6th Dec., 1956

Bhīmāmbedkarśatakaü[1]
भीमाम्बेडकरशतकम्

सरस्यां पंकजं प्राप्य गुंजन्ति भ्रमरा भृशम्।
जगत्यां सुजनं लब्ध्वा हर्षं तन्वन्ति मानवाः॥1॥

तालाब में कमल को पाकर
भौंरे बहुत गुंजन करते हैं।
दुनियाँ में भले लोगों को पाकर
(उत्तम कोटि के) मनुष्य हर्ष का विस्तार करते हैं।।1।।

Sarasyāṁ paṁkajaṁ prāpya
guṁjanti bhramarā bhṛśam,
Jagatyāṁ sujanaṁ labdhvā
harṣaṁ tanvanti mānavāḥ.1.

On getting Lily flowers in a pond
bees resort to a lot of humming,
(Likewise) in the world after getting good people,
(noble) men extend and enlarge joy.1.

---

1. **मंगल-वचन**- सुगतकविरत्न शान्तिभिक्षु शास्त्री अपनी सारी कृतियों का **एवं प्रस्तावना** का प्रारंभ बुद्ध-वन्दना से करते हैं। साथ में उपयुक्त और यथोचित प्रस्तावना भी देते हैं। उसमें ग्रन्थ-लेखन का प्रयोजन,

अभवन् ये पुरा सर्वे ये भविष्यन्त्यनागते।
भवन्ति सांप्रतं येऽत्र मानसे ते स्फुरन्तु मे॥2॥

(ऐसे) सारे लोग जो प्राचीन काल में उत्पन्न हुए,
भविष्यकाल में उत्पन्न होंगे
(और) आज यहाँ पर उत्पन्न हुए हैं,
वे मेरे मन को स्फुरित करें॥2॥

Abhavan ye purā sarve
ye bhaviṣyantyanāgate,
Bhavanti sāṁpratam ye'tra
mānase te sphurantu me.2.

All Persons (like them) who were born in the
past, will be born in future
(and) are born here at present,
they should vibrate my mind.2.

सन्दर्भ और अन्य सूचनायें अवश्य देते हैं। इस मामले में यह ग्रन्थ अपवाद है। इसमें न तो कोई मंगल-वचन दिया है और न ही प्रस्तावना। काव्य के कवरपेज (शीर्षकपृष्ठ) पर कृति के लेखन का वर्ष-1990 दिया हुआ है और ग्रन्थ की पुष्पिका में काव्य की समापन तिथि भी अंकित है और वह थी 21 नवंबर, 1990 ईसवी; इसका अर्थ यह हुआ कि कवि ने 1990 ईसवी वर्ष में लिखना प्रारम्भ किया और उसी वर्ष में समाप्त भी कर दिया। यह ईसवीय बीसवीं सदी का नब्बेवाँ वर्ष था।

तेषामत्रावतीर्णानां[2] सुजनानां युगे नवे।
भीमं संस्मर्तुमिच्छामि शताब्द्यां नरपुंगवम्।।3।।

यहाँ पर इस नये युग में अवतरित (प्रविष्ट) हुए
उन भले लोगों में से
इस शताब्दी (बींसवीं शताब्दी में जब काव्य लिखा गया) के
सर्वश्रेष्ठ भीम को स्मरण करना चाहता हूँ।।3।।

Teṣāmatrāvatīrṇānaṁ
sujanānāṁ yuge nave,
Bhīmaṁ saṁsmartumicchāmi
śatābdyāṁ narapuṁgavam.3.

Of all the good people who came here and appeared into this new era, the best among them during this century (twentieth century when this poem was written) is Bhīma. I want to remember him.3.

---

2. **अवतीर्णानाम्**- कवि का यह बड़ा प्रिय शब्द प्रतीत होता है। बुद्धोदयकाव्य और बुद्धविजयकाव्य में भी इस शब्द का बहुधा प्रयोग हुआ है। बौद्ध शास्त्रों में 'अवतार' का अर्थ 'प्रवेश' है जैसे लंकावतार (सूत्र) में। कवि अवतारवाद के समर्थक नहीं थे।

लोके महारशब्दो[3] यो जातिवाचक आदृतः[4]।
महाराष्ट्राभिधः शब्दो स सिद्धो देशवाचकः।।4।।

जो महार शब्द समाज में (लोगों में) जातिवाचक है
और इसी अर्थ में प्रचलित है,
(वस्तुतः) महाराष्ट्र नाम वाला शब्द देशवाचक (राष्ट्रवाचक)
प्रसिद्ध हो गया।।4।।

Loke Mahāraśabdo yo
jātivācaka ādṛtaḥ,
Mahārāṣṭrābhidhaḥ śabdo sa
siddho deśavācakaḥ.4.

The word Mahāra which represents a caste
in the society is popular in the same sense,
Actually the name Mahārāshtra's
stands for nation. .4.

---

3. **महार शब्दः**– यह एक सर्वविदित बात है कि बाबासाहेब भीमराव आम्बेडकर महाराष्ट्र की अन्त्यज जाति, जिसे महार कहा जाता है, में पैदा हुये थे। महार जाति महाराष्ट्र से जुड़े मध्यप्रदेश के क्षेत्रों में भी पाई जाती है। यहाँ कवि ने अपने विशिष्ट भाषाविज्ञान के ज्ञान का परिचय दिया है। वस्तुतः 'महार' शब्द महाराष्ट्र शब्द से ही निष्पन्न (निकला हुआ) प्रतीत होता है। इसे भाषाविज्ञान की गुत्थी ही कहेंगे कि राष्ट्र या क्षेत्र द्योतक पद जाति-सूचक बन गया।

4. **आदृतः**– यह कवि का अपना दृष्टिकोण है। 'आदृत' का अर्थ है जिसका आदर किया जाय। हिन्दू समाज में यदि महार जाति आदृत होती, तो भीमराव में विद्रोह का स्वर आता ही नहीं, वे विरोध का बिगुल बजाते ही क्यों? इसका एक दूसरा पक्ष भी है। अपनी महार बिरादरी में उनका कुल अत्यन्त आदृत था, इसमें कोई सन्देह नहीं।

महाराणां गणे तस्मिन् रामजी-तनुसंभवः।
भीमरावोऽभवत् ख्यातः स्वगुणैः पृथिवीतले॥5॥

उस महारों के समूह में रामजी (नामक) व्यक्ति के पुत्र के
रूप में उत्पन्न
भीमराव अपने गुणों के कारण पूरे पृथ्वी तल पर प्रसिद्ध
हुए॥5॥

Mahārāṇāṁ gaṇe tasmin
Rāmajī-tanusaṁbhavaḥ,
Bhīmarāvo'bhavat khyātaḥ
svaguṇaiḥ pṛthivītale.5.

Out of that group of Maharas
Bhimrao born as the son of Ramji
became popular on the whole earth
due to his qualities.5.

तस्मिन् वंशावतंस[5] आसन ये संजाताः सतां मताः।
कबीरा[6]दिप्रभावैस्ते बभूवुः प्रभविष्णवः॥6॥

उस आभूषणरूपी वंश में
जो लोग उत्पन्न हुए,
वे कबीर आदि के प्रभाव से प्रभावित थे
ऐसी सज्जनों की राय है।।6।।

Tasmin vaṁśāvataṁsa āsana
ye saṁjātāḥ satāṁ matāḥ,
Kabīrādiprabhāvaiste
babhūvuḥ prabhaviṣṇavaḥ.6.

Those born in that jewel like family,
were influenced by Kabir and others.
This is the opinion of good people.6.

---

5. **वंशावतंस**- अवतंस शब्द का अर्थ गहना या आभूषण है। उनका कुल महारों का आभूषण था।

6. **कबीर**- कबीर एक सूफी सन्त थे। वे हिन्दूओं और मुसलमानों में समानरूप से आदृत थे, विशेषतः हिन्दूओं की पिछड़ी जातियों में। वे निर्गुण, निराकार ईश्वर के उपासक थे। मुस्लिम परिवार में जन्में कबीर इस्लाम के प्रमुख सिद्धान्त तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रबल पोषक थे। वे मूर्ति-पूजा के प्रबल विरोधी थे। वाराणसी उनका कार्यक्षेत्र था।

कुर्युस्ते तु न पाषाणपूजां[7] निर्गुणरागिणः।
पाषाणेषु वरा तेषां गृहेषु ननु चक्रिका॥7॥

निर्गुण ईश्वर में अनुराग रखने वाले पत्थर की पूजा नहीं करते।
पत्थर से अच्छी तो उनके घर की चकिया है
(जिसमें पिसे आटे से लोग जीवित रहते हैं)॥7॥

Kuryuste tu na pāṣāṇa-
pūjāṁ nirguṇarāgiṇaḥ,
Pāṣāṇeṣu varā teṣāṁ
gṛheṣu nanu cakrikā.7.

Those having faith in formless God do not worship statues of Stone.
The grinding stone in their houses is better than the stone (since the grinding stone becomes instrumental in feeding people).7.

---

7. **पाषाणपूजा**- इस्लाम मूर्ति-पूजा का विराधी है। अतः कबीर ने इस बात पर अत्यधिक जोर दिया। उन्होंने मूर्ति-पूजा की खिल्ली उड़ाई उदाहरण के लिये उनका एक दोहा --

पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़।
घर की चकिया कोउ न पूजे जा का पीसा खाय।

लगता है कि यह सातवाँ और बाद के नौंवे व दसवें श्लोक सन्त कबीर के इस दोहे के संस्कृत अनुवाद हैं।

ते गायन्ति महाधीराः कृत्वा मनसि तं प्रभुम्।
यस्य प्रभावतो हीना भवन्ति क्लेशजालिकाः[8]॥8॥

वे महान् ज्ञानवान् लोग उस प्रभु (ईश्वर) को मन में धारण करके उसकी प्रशंसा में गीत (भजन) गाते हैं। जिसके प्रभाव से क्षुद्र लोगों के क्लेश के जाल नष्ट हो जाते हैं (ऐसी ईश्वरवादियों की मान्यता है)॥8॥

Te gāyanti mahādhīrāḥ
kṛtvā manasi taṁ prabhum,
Yasya prabhāvato hīnā
bhavanti kleśajālikāḥ.8.

Those great knowledgeable persons keeping that God in their hearts sing songs in His praise. On whose impact the net of suffering is destroyed (This is the opinion of the Theists).8.

---

8. ऐसा लगता है कि कवि का यहाँ तातर्प्य 'छिन्नजालिकाः' से है।

पर्वतान् पूजये सर्वान् दिक्षु दिक्षु व्यवस्थितान्।
यदि पाषाणपूजातः प्रभोर्लाभो भवेत् क्वचित्॥9॥

यदि पत्थर की पूजा से ईश्वर का लाभ
(उससे साक्षात्कार) हो जाये, तो मैं हर दिशाओं में स्थित
पहाड़ों की पूजा करूँ।

Parvatān pūjaye sarvān
dikṣu dikṣu vyavasthitān,
Yadi pāṣāṇapūjātaḥ
prabhorlābho bhavet kvacit.9.

If worshiping the stone is beneficial to attain the
God, I worship the mountains of all directions.9.

यस्याः पिष्टेन कुर्वन्ति चूर्णकेन महाजनाः।
बलिपूजादि-सत्कारं चक्रिकां तां नमाम्यहम्॥10॥

जिस चक्की से पिसे हुये आटे से तमाम लोग देव-देवताओं को चढ़ावा चढ़ाते हैं, पूजा-सत्कार करते हैं, उस चकिया को मैं नमस्कार करता हूँ।।10।।

Yasyāḥ piṣṭena kurvanti
cūrṇakena mahājanāḥ,
Balipūjādi-satkāraṁ
cakrikāṁ tāṁ namāmyaham.10.

A large number of people worship gods and deities with the items made of the flour ground with the help of grinding stone; I (therefore) bow to that grinding stone..10.

चक्रिकाया हि माहात्म्यं को न जानाति भूतले।
यस्या हि घर्घरध्वानं प्रातराह्वयति श्रियम्॥11॥

इस पृथ्वी पर चक्की के माहात्म्य (देव-देवताओं के बड़प्पन का आभास) को कौन नहीं जानता। प्रात:काल जिसकी घर-घर ध्वनि श्री (समृद्धि) का आवाहन करती है॥11॥

Cakrikāyā hi māhātmyaṁ
ko na jānāti bhūtale,
Yasyā hi ghargharadhvānaṁ
prātarāhvayati śriyam.11.

On this earth who does not know the greatness (the feeling of the divine greatness) of the grinding stone. Its gharhar sound in the morning invites richness in every house.11.

चलन्त्याश्चक्रिकायाश्चेद् ध्वनिनापूर्यते नभः।
लक्ष्मीर्भवति संहृष्टा[9] विचरन्ती समन्ततः॥12॥

चलती हुई चक्की की ध्वनि से पूरा आकाश भर जाता है, (और इस प्रकार) चारों तरफ विचरण करती हुई लक्ष्मी प्रसन्न होती है॥12॥

Calantyāścakrikāyāśced
dhvaninānāpūryate nabhaḥ,
Lakṣmīrbhavati saṁhṛṣṭā
vicarantī samantataḥ.12.

The sky fills with the sound of the grinding stone,
(and thus) goddess Laksmi moving around
becomes happy.12.

---

9. ऐसी ग्रामीण मान्यता रही है कि जाँत की आवाज लक्ष्मी को प्रसन्न करती है और उस घर की ओर उन्हें आकर्षित करती है।

एवंविधविचाराणामाचाराणां च सितप्रभा।
जनान् यान् समभिव्याप्ता तेषु भीमोऽवतीर्णवान्[10] ॥13॥

इस प्रकार के विचारों व आचारों से निकलने वाली सफेद रंग वाली (श्वेत) प्रभा (आभा) जिन लोगों में व्याप्त थी उन लोगों में भीम (डॉ भीमराव रामजी आम्बेडकर) का जन्म हुआ।।13।।

Evaṁvidhavicārāṇām
ācārāṇāṁ ca sitaprabhā,
Janān yān samabhivyāptā
teṣu bhīmo'vatīrṇavān.13.

(Spotless) White light emanated from such thoughts and behaviour spread over those people among whom Bhima (Bhimarao Ramaji Ambedkar) was born.13.

---

10. यहाँ अवतरण का अर्थ मात्र जन्म लेना है न कि अवतार लेना।

हर्षितः स्वजनैर्नित्यं मर्षितश्चोद्धते क्षणे।

शरदां षट्स्वतीतेषु दुःखभागभवच्छिशुः[11]॥14॥

इस प्रकार अपने परिवार के लोगों से सदैव प्रसन्नता प्राप्त करते हुए और प्रत्येक क्षण में उनसे उत्साह पाते हुए छः वर्षों के बीत जाने पर (शिशु भीम) पर दुख आ पड़ा॥14॥

Harṣitaḥ svajanairnityaṁ

marṣitaścoddhate kṣaṇe,

Śaradāṁ ṣaṭsvatīteṣu

duḥkhabhāgabhavacchiśuḥ.14.

In this way every moment getting joy from the members of his family and getting encouragement from them he suffered a blow of sorrow after the sixth year.14.

---

11. उनकी माता के देहान्त के समय उनकी आयु मात्र छः वर्ष की ही थी। वस्तुतः उस समय वे बालक थे न कि शिशु, किन्तु कवि ने उन्हें शिशु ही माना।

भीमादेवी हि तन्माता रोगाक्रान्ता स्वकर्मणा[12]।
चिकित्सितापि न स्वास्थ्यं लेभे स्वर्गमुपाश्रिता।।15।।

अपने ही कर्मों के कारण उनकी माता भीमा देवी जो रोगों से घिरी हुई थीं, दवा किये जाने पर भी स्वास्थ्य लाभ न पा सकीं और वे स्वर्ग चली गईं।।15।।

Bhīmādevī hi tanmātā
rogākrāntā svakarmaṇā,
cikitsitāpi na svāsthyaṁ
lebhe svargamupāśritā.15.

His mother Bhima Devi who was under attack of the deseases because of her own deeds went to heaven even after getting medicine her health could not be improved.15.

---

12. वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति अपने ही कर्मों से रोगी होता है किन्तु यदि यहाँ इसका अर्थ पूर्व जन्म के कर्मों से है तो यह अम्बेडकर की विचार-धारा से मेल नहीं खाता। किन्तु यदि इसी जन्म के कर्म से है अर्थात् स्वास्थ पर ध्यान न देना, चोट लगना आदि से है तो ठीक है।

पितृनाथः स ववृधे शिक्षाकालेऽनुभूतवान्।

अन्त्यज[13]त्वान्महापीडामुच्चवर्णापमानितः।।16।।

वह बालक पूर्णतः पिता की अभिभावकपन (सनाथता, देख-रेख) में बढ़ता गया और शिक्षा काल में ही उसने (बालक ने) अन्त्यज होने के कारण उच्च वर्ण के लोगों के द्वारा अपमानित हो कर अत्यन्त पीड़ा का अनुभव किया।।16।।

Pitṛnāthaḥ sa vavṛdhe

śikṣākāle'nubhūtavān,

Antyajatvānmahāpīḍām

uccavarṇāpamānitaḥ.16.

That boy grew fully under the protection (guardianship) of his father and during his education period being an outcaste he experienced acute pain on being humiliated by the people of higher castes.16.

---

13. हिन्दू धर्म शास्त्र के अनुसार चार ही वर्ण माने गये हैं, किन्तु हिन्दुओं में ऐसी अनेक जातियाँ व वर्ग थे जो इन चारों वर्णों के बाहर थे। उन्हें अन्त्यज या अवर्ण या वर्णहीन कहा गया है। महाराष्ट्र के महार उसी प्रकार वर्ण विहिन थे।

प्रवेशस्तस्य शिक्षायाः संस्थानेषु सुदुर्लभः[14]।

बभूवान्त्यजविख्यातकुलजन्मतया तदा॥17॥

शिक्षा की सभी संस्थाओं मे उसका प्रवेश अत्यन्त दुर्लभ हो गया था, क्योंकि बालक भीमराव की पहचान अन्त्यज कुल में पैदा हुए बालक की थी॥17॥

Praveśastasya śikṣāyāḥ

saṁsthāneṣu sudurlabhaḥ,

Babhūvāntyajavikhyāta

kulajanmatayā tadā.17.

His admission became almost impossible in all educational Institutions due to the identification of Bhimarao as a boy of born in outcaste family.17.

---

14. स्वतन्त्रता पूर्व एवं बाद तक भी विद्यालयों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में अछूतों की शिक्षा प्रतिबंधित थी। हिन्दू धर्म शास्त्र के अनुसार मात्र प्रथम तीन वर्णों को ही शिक्षा प्राप्ति की अनुमति थी।

पित्रा सह गृहे तिष्ठन् क्रीडाकौतुकतत्परः।
समुद्धतो बभौ यष्टिलोष्ठरश्मिपरायणः[15]॥18॥

पिता के साथ घर में रहते हुए (रह कर) बालक
खेल-तमाशों इत्यादि में लगा रहा।
(और) इस प्रकार वह लाठी, ढेला, रस्सी फेंकना
इत्यादि खेलों में पारंगत हो गया॥18॥

Pitrā saha gṛhe tṣṭhan
krīḍākautukatatparaḥ,
Samuddhato babhau yaṣṭi
loṣṭharaśmiparāyaṇaḥ.18.

Staying with his father at home he was engaged
in playing games etc. and thus he developed
expertise in stick fighting, stone throwing
and rope brandishing, etc.18.

---

14. लाठी भाँजना, पत्थर एवं रस्सी फेंकना इत्यादि ग्रामीण खेल हैं जिनमें लगभग सभी ग्रामीण कम या अधिक निपुणता अवश्य अर्जित कर लेते हैं।

सेवायां राजकीयस्याभवत् सैन्यस्य तत्पिता ।

ततः प्रवेशस्तस्याभूत् तच्छिक्षायतने सुखम्[16] ॥19॥

तत्पश्चात् उनके पिता (रामजी राव) ने सरकारी
सैन्य सेवा में नौकरी प्राप्त कर ली।
परिणामस्वरूप सैन्य विद्यालय में (बिना कठिनाई के)
उनका प्रवेश हो गया।

Sevāyāṁ rājakīyasyā-

bhavat sainyasya tatpitā,

Tataḥ praveśastasyābhūt

tacchikṣāyatane sukham.19.

After that his father (Ramji Rao) got job in the Govermental Military Service, as a result he got admission in Military School without any difficulty.19.

---

15. सैन्य विद्यालयों में प्रवेश में भेद-भाव नहीं होता था। प्रत्येक सैन्य कर्मी के परिवार जनों को उन विद्यालयों में प्रवेश पाने एवं शिक्षा ग्रहण करने में कोई कठिनाई नहीं आती थी।

शिक्षामुखमुपेतोऽसौ सुबहुक्रमवानभूत् ।
स्वाग्रजानन्दरावेण सह चर्या[17] परोऽचरत् ॥20॥

(बालक भीमराव) शिक्षा का मार्ग (अवसर) पा कर बहुत क्रमवान (नियबद्ध रूप में काम करने वाला) हो गया। और वह अपने बड़े भाई आनन्द राव के साथ विद्यार्थी की कार्यपद्धति का पालन करने लगे।।20।।

Śikṣāmukhamupeto'sau
subahukramavānabhūt,
Svāgrajānandarāveṇa
saha caryāparo'carat.20.

The Boy Bhimarao after getting the path of Education, became very systematic and along with his elder brother Anandarao started observing the routine work of a student.20.

---

17. चर्या: किसी धार्मिक या आध्यात्मिक अनुष्ठान के लिये किये गये कार्य को चर्या कहा जाता है। बौद्धों में चर्या का बड़ा महत्त्व है। प्रत्येक बोधिसत्त्व बुद्ध बनने के लिये जिन नियमों का पालन करता है उसे चर्या कहा जाता है।

शताब्द्यां वर्तमानायां[18] भीमः सप्तमवत्सरे ।
मैट्रिकाख्यां समुत्तीर्णः परीक्षां सततश्रमी ॥21॥

इस वर्तमान शताब्दी के सातवें वर्ष में बालक भीम ने निरन्तर श्रम करते हुए मैट्रिक नामक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।।21।।

Śatābdyāṁ vartamānāyāṁ
bhīmaḥ saptamavatsare,
Maiṭrikākhyāṁ samuttīrṇaḥ
parīkṣāṁ satataśramī.21.

In the seventh year of the current century Boy
Bhima after continuously working hard
passed the Matric examination.21.

---

18. यहाँ वर्तमान शताब्दी से तात्पर्य बीसवीं शताब्दी से है जब बालक अम्बेडकर ने मैट्रिक (तत्कालीन सैकेण्डरी परीक्षा) पास किया। कवि ने यह ग्रन्थ भी बीसवीं सदी में लिखा था। डॉ आम्बेडकर का जन्म तो उन्नीवीं सदी के हुआ था।

उपलब्धिरियं तस्मिन् काले बहुविधार्चिता ।
चर्चिता[19] च महाह्लादपरैः स्वजनबान्धवैः ॥22॥

उस युग में यह बहुत प्रयास से अर्जित की हुई उपलब्धि अत्यन्त चर्चित हुई। उनके अपने अत्यन्त प्रसन्न बन्धुओं सगे-संबन्धियों और बिरादरी के लोगों में। यही बड़ी उपलब्धि मानी गई।।22।।

Upalabdhiriyaṁ tasmin
kāle bahuvidhārcitā,
Carcitā ca mahāhlāda
paraiḥ svajanabāndhavaiḥ.22.

At that point of time this achievement earned by great efforts had been highly appreciated. It was highly talked about among his relatives, friends and community people.22.

---

19. कवि ने यहाँ अनुप्रयास अलंकार का प्रयोग किया है।

केलुस्कर[20] प्रभृतिभिः समवेतैः शुभैर्जनैः ।
भीमोऽभिनन्दितः प्रीत्या दत्तः प्रोत्साहनांजलिः ॥23॥

उस अवसर पर उनके शुभेच्छु केलुस्कर इत्यादि एकत्रित लोगों के द्वारा बालक भीम का अभिनन्दन किया गया और प्रेम से उन्हें तरह-तरह के प्रोत्साहन दिये गये।।23।।

Keluskara prabhṛtibhiḥ
samavetaiḥ śubhairjanaiḥ,
Bhīmo'bhinanditaḥ prītyā
dattaḥ protsāhanāṁjaliḥ.23.

The Boy Bhima was facilitated by his well-wishers like Keluskara, etc. assembled on that occassion and was encouraged in many ways with love and affection.23.

---

20. उनके शिक्षक जिन्होंने उनकी शिक्षा, मार्गदर्शन, इत्यादि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

भीमस्य संस्तुतिं ज्ञात्वा सर्वभावेन सज्जनः ।
तस्मै समर्पयामास बुद्धजीवनपुस्तकम् ।।24।।

और सभी प्रकार से सज्जन (केलुस्कर महोदय) ने भीम की शिक्षा मे अभिरूचि को जान कर उनको बुद्ध के जीवन पर लिखी पुस्तक को उपहार में दिया।124।।

Bhīmasya saṁstutiṁ jñātvā
sarvabhāvena sajjanaḥ,
Tasmai samarpayāmāsa
Buddhajīvanapustakam.24.

(Mr. Keluskar) who was a perfect gentleman
after knowing the interest of Bhima in education
presented him a book written on the
Biography of Buddha.24.

भीमस्य पितरं चाह शिक्षयैनं सुबालकम् ।
साहाय्यं तव कर्तास्मि यथाशक्ति यथाक्षणम् ।।25।।

उन्होंने (केलुस्कर महोदय) बालक भीम के पिता से कहा
इस बालक को शिक्षा दिलाइये।
मैं यथाशक्ति समय-समय पर आपकी सहायता करूँगा।।25।।

Bhīmasya pitaraṁ cāha
śikṣayainaṁ subālakam,
Sāhāyyaṁ tava kartāsmi
yathāśakti yathākṣaṇam.25.

He (Mr. Keluskar) told his father
"Do educate the boy"
he will help him time to time
and according to his capacity.25.

आसीत्समुत्सुको भीमः संस्कृताध्ययने परः[21] ।
तस्याग्रजस्तथैवासीत् संस्कृते ह्यनुरागवान् ॥26॥

बालक भीम संस्कृत के अध्ययन में उत्सुक थे,
उनके बड़े भाई भी उसी प्रकार संस्कृत के अध्ययन के प्रति
अनुराग रखते थे।।26।।

Āsītsamutsuko bhīmaḥ
saṁskṛtādhyayane paraḥ,
Tasyāgrajastathaivāsīt
saṁskṛte hyanurāgavān.26.

The Boy Bhima was interested in study of
Samskrit (and) his elder brother too had attach-
ment with Samskrit.26.

---

21. उनके सामने विद्यालय में संस्कृत या फारसी में से एक विषय चुनने का विकल्प था। उनकी रूचि संस्कृत पढ़ने की थी किन्तु अध्यापकों के कहने पर उन्होने फारसी चुना। ब्राह्मण अध्यापक नहीं चाहते थे कि अन्त्यज का बेटा संस्कृत पढ़े।

विप्रस्तत्राध्यापकोऽभूत् किन्तु वर्णानुरागवान् ।
अवर्णो हीनजातिस्तत् कथं स्यादवकाशभाक्[22]॥27॥

किन्तु उनके अध्यापक ब्राह्मण थे और
वे वर्ण-व्यवस्था में अनुराग रखने वाले थे।
अतः वर्ण विहीन बालक होने के कारण उनको
संस्कृत पढ़ने का अवसर कैसे मिल सकता था।।27।।

Viprastatrādhyāpako'bhūt
kintu varṇānurāgavān,
Avarṇo hīnajātistat
kathaṁ syādavakāśabhāk.27.

But his teacher was a Brahman
and had attachment with Caste system
and thus how can a casteless boy get chance
to study Sanskrit.27.

---

22. हिन्दू धर्म-शास्त्र के अनुसार केवल द्विजों को ही संस्कृत पढ़ने का अधिकार था किसी अन्य को नहीं।

भीमो न संस्कृताध्येता न तद्भ्राता ततोऽभवत् ।
पारसीकं वचः श्रुत्वा तौ लब्धौ कृतकृत्यताम् ॥28॥

बालक भीम संस्कृत का अध्ययन करने वाले नहीं बने और उनके भाई भी ऐसे ही रहे। फारसी वचन को सुन कर उन्होंने उसी में अपने काम की पूर्णता मान ली।।28।।

Bhīmo na Saṁkṛtādhyetā
na tadbhrātā tato'bhavat,
Pārasīkaṁ vacaḥ śrutvā
tau labdhau kṛtakṛtyatām.28.

The Boy Bhima could not become Sanskrit learner and his brother also remained like him. On hearing Persian words, they thought that they had accomplished their task.28.

भीमः स्वेन प्रयत्नेन स्वबुद्ध्या संपरिष्कृतः ।
श्रेष्ठः सिद्धो हि भाषायां तस्यां निपुणतां गतः ॥29॥

भीम (डॉ भीमराव रामजी आम्बेडकर) ने स्वयं अपने ही प्रयत्न व बुद्धि से उस भाषा में परिष्कार प्राप्त किया और निपुणता प्राप्त की।।29।।

Bhīmaḥ svena prayatnena
svabuddhyā saṁpariṣkṛtaḥ,
Śreṣṭhaḥ siddho hi bhāṣāyāṁ
tasyāṁ nipuṇatāṁ gataḥ.29.

Bhima (Dr. Bhimarao Ramji Ambedkar)
with his own efforts and intellect
attained skill and proficiency
in that language.29.

महाराणां समाजो हि तत्साफल्येन मोदितः ।
अस्पृश्य-बालकस्यैषा लब्धिरासीत् सुपूजिता ॥30॥

महारों का वह समाज
बालक भीम की सफलता से बहुत प्रसन्न हुआ,
एक अछूत बालक की यह उपलब्धि
भली-भाँति अभिनन्दित हुई।।30।।

Mahārāṇāṁ samājo hi
tatsāphalyena moditaḥ,
Aspṛśya-bālakasyaiṣā
labdhirāsīt supūjitā.30.

The Mahar community rejoiced over
the success of Boy Bhima,
the achievement of an untouchable boy
was well honoured.30.

भीमः परिश्रमी सिद्धः स्वकीयाध्ययनक्षणे ।
विहाय सर्वान् संसर्गान् विद्यालक्ष्यपरायणः ।।31।।

बालक भीम अपने अध्ययन के अवसरों में
अत्यन्त परिश्रमी व सफल थे,
सारे संसर्गों (संबंधों, संपर्कों, गतिविधियों) को छोड़ कर
विद्या प्राप्ति के लक्ष्य में लगे रहे।।31।।

Bhīmaḥ pariśramī siddhaḥ
svakīyādhyayanakṣaṇe,
Vihāya sarvān saṁsargān
vidyālakṣyaparāyaṇaḥ.31.

The Boy Bhima was very laborious and
successful in the moments of his education,
keeping all relations (contacts, extracurricular
activities) aside he would keep himself
engaged in his educational goal.31.

तत्पिता किन्तु विश्रामकाललब्धोपवेतनः[23] ।
समर्थो नाभवद् धीरः शिक्षयितुं सुतद्वयम् ॥32॥

किन्तु उनके समझदार पिता
नौकरी से अवकाश प्राप्ति के बाद
प्राप्त उपवेतन (पेंशन) से अपने दोनों पुत्रों को
शिक्षा दिलाने में समर्थ नहीं थे॥32॥

Tatpitā kintu viśrāma
kālalabdhopavetanaḥ,
Samartho nābhavad dhīraḥ
śikṣayituṁ sutadvayam.32.

But his father was not able
to provide education to his two sons
with the pension amount
after his retirement from the job.32.

---

23. कवि ने पेंशन (pension) को उपवेतन कहा है, जो उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। वस्तुतः वह ता एक प्रकार की भूतपूर्वसेवार्थ वृत्ति है, तो उस व्यक्ति को पहले की गई सेवाओं की एवज में दी जाती है।

ततो भीमाग्रजं पुत्रमानन्दं भृतिकर्मणा ।
कस्यांचित् कर्मशालायां कृतोत्साहो न्ययोजयत् ।।33।।

उसके बाद उनके उत्साही पिता ने
बड़े भाई आनन्द को
किसी कर्मशाला में
दैनिक पारिश्रमिक पर लगवा दिया।।33।।

Tato bhīmāgrajaṁ putra
mānandaṁ bhṛtikarmaṇā,
Kasyāṁcit karmaśālāyāṁ
kṛtotsāho nyayojayat.33.

Thereafter (Bhima's) father
enthusiastically got engaged
his elder brother Ananda
in a workshop on daily wages.33.

भीमस्तु पित्रानुमतौ[24] विद्याध्ययनतत्परः ।
पाणिं जग्राह रामाया नवोढो व्यलसत् सुखम् ।।34।।

विद्या के अध्ययन में लगे हुए भीम ने
पिता की अनुमति से रमा के साथ विवाह किया
(शाब्दिक अर्थ - रमा का हाथ पकड़ा)
और नवविवाहित सुख से समय बिताने लगे।।34।।

Bhīmastu pitrānumato
vidyādhyayanatatparaḥ,
Pāṇiṁ jagrāha rāmāyā
navoḍho vyalasat sukham.34.

Engaged in his studies, Bhima with the
permission of his father married
(literally, caught Rāmā's hand) Rāmā and thus
the newly married couple enjoyed comforts.34.

---

24. कवि ने किशोर भीम के विषय में विवाह के लिये 'अनुमत' शब्द का प्रयोग किया है, वस्तुतः 'अनुशासित' शब्द का प्रयोग होना चाहिये। यही वस्तुस्थिति थी।

लभते स्म प्रवेशं च स विद्यायतने ततः ।
एल्फ़िष्स्टनाह्वये धीमान् योऽभवच्चातिदुर्लभः ॥35॥

उसके बाद उस बुद्धिमान (छात्र) ने एल्फ़िष्टन नामक
महाविद्यालय में प्रवेश पाया। इस प्रकार उनको वहाँ प्रवेश
मिला, जहाँ प्रवेश पाना अत्यन्त दुर्लभ था।।35।।

Labhater sma praveśaṁ ca
sa vidyāyatane tataḥ,
Elphiṣṭanāhvaye dhīmān
yo'bhavaccātidurlabhaḥ.35.

Thereafter the intelligent student
got admission in a College named Elephenstin.
Thus he got admission in a College
where it was very difficult.35.

विशेषाद्[25] हीनवर्णत्वाद् धनहीनस्य तत्क्षणे ।
सवर्णावर्णभावेन कलुषेऽत्र नृणां गणे ।।36।।

विशेष कर उनके हीन वर्ण के होने के कारण और उस अवसर पर धनहीन होने के कारण। क्योंकि यहाँ मनुष्यों के समूह सवर्ण और अवर्ण के भेदभाव से काले पड़ गये हैं।।36।।

Viśeṣād hīnavarṇatvād
dhanahīnasya tatkṣaṇe,
Savarṇāvarṇabhāvena
kaluṣe'tra nṛṇāṁ gaṇe.36.

Specially due to the fact that he belonged to the lower caste and that he was poor at that time. As groups of people here have darkened themselves on account of differentiation between the Upper caste and outcaste.36.

---

25. श्लोक संख्या 35 औा 36 का एक युग्म (जोड़ा) है, इनको साथ पढ़े।

केलुस्करोऽभूत् कल्याणमित्रं[26] पुण्यानुभाववान् ।
सयाजीरावतः सोऽभूच्छात्रवृत्त्युपलब्धिमान् ॥37॥

पुण्य अनुग्रह वाले केलुस्कर महोदय
उस बालक के कल्याणमित्र बन गये।
इस प्रकार वे सयाजी राव (महाराजा बड़ोदरा)
से छात्रवृत्ति प्राप्त कराने वाले बने।।37।।

Keluskaro'bhūt kalyāṇa
mitraṁ puṇyānubhāvavān,
Sayājīrāvataḥ so'bhūc
chātravṛttyupalabdhimān.37.

Being a man of kind affection
Mr. Keluskara became his spiritual guide
and provider of scholarship from
the Sayājī rāo (king of Baroda).37.

---

26. बौद्ध धर्म में कल्याणमित्र एक विशिष्ट पारिभाषिक पद है, जिसका अर्थ आध्यात्मिक गुरु है। किन्तु यहाँ कवि ने उसको व्यापक अर्थ में कल्याण चाहने वाले पथप्रदर्शक के अर्थ में लिया है।

वृत्तिः सा तरतो विद्यार्णवे नौकोपमाभवत् ।
प्रसन्नो सोऽपि चित्तेऽभूत् स्वानुरक्तजनैः सह ॥ 38॥

वह छात्रवृत्ति विद्यारूपी सागर को पार करने में
नौका की तरह हो गई।
अपने ऊपर अनुराग रखने वाले उन लोगों के साथ
वे भी (डॉ भीमराव रामजी आम्बेडकर) प्रसन्न हुए।।38।।

Vṛttiḥ sā tarato vidyā
arṇave naukopamābhavat,
Prasanno so'pi citte'bhūt
svānuraktajanaiḥ saha.38.

That scholarship became like a boat
to cross the ocean of learning.
Bhimarao Ambedkar became happy along with
others who had affection towards him.38.

तस्मिन् हि विद्यायतनेऽस्पृश्यत्वाज्जातिवर्णतः ।
तिरस्कृतो बभूवाति सवर्णैश्छात्रशिक्षकैः ॥39॥

उस महाविद्यालय में
जाति व वर्ण के आधार पर अछूत होने के कारण
वे सवर्ण छात्रों व शिक्षकों के द्वारा
अत्यन्त तिरस्कृत हुए।।39।।

Tasmin hi vidyāyatane'
spṛśyatvājjātivarṇataḥ,
Tiraskṛto babhūvāti
savarṇaiśchātraśikṣakaiḥ.39.

Being an Untouchable on account of
his birth and caste,
he was highly dishonoured by the upper caste
students and teachers of that college.39.

मुल्लरोऽध्यापकः किं तु स्निग्धो भीमे सदाभवत् ।
भीमाय प्रददौ प्रीत्या वासांसि नितरां सुधीः ॥40॥

लेकिन मुल्लर नाम के अध्यापक
भीम के प्रति सदैव स्नेह रखते थे।
उस विद्वान ने भीम को प्रेम से
पहनने के लिये कपड़े दिये।।40।।

Mullaro'dhyāpakaḥ kiṁ tu
snigdho bhīme sadābhavat,
Bhīmāya pradadau prītyā
vāsāṁsi nitarāṁ sudhīḥ.40.

But a teacher named Mullar
had always affection towards Bhima.
Out of affection that learned scholar
gave clothes to Bhima (to wear).40.

श्रीमान् इराणी चाप्यासीत् तस्मिन् प्रेमपरायणः ।
स्वप्रकोष्ठं स भीमाय पठनार्थं वितीर्णवान् ।।41।।

श्रीमान् इराणी भी उनके (भीम) प्रति
प्रेमभाव रखते थे।
उन्होंने भीम को पढ़ने के लिये
अपना कमरा दे दिया।।41।।

Śrīmān Irāṇī cāpyāsīt
tasmin premaparāyaṇaḥ,
Svaprakoṣṭhaṁ sa bhīmāya
paṭhanārthaṁ vitīrṇavān.41.

Mr. Irani had also affection
towards Bhima.
He allowed Bhima in his room
for studies.41.

एतावध्यापकौ प्रीतौ सदा भीमस्य कर्मणा ।
मुदितौ च विलोक्याथ तं कृत्ये कुशले स्थितम् ।।42।।

ये दोनों अध्यापक भीम के काम से सदैव प्रसन्न रहते थे।
वे भीम को कुशल कृत्य में लगा हुआ देख कर
अत्यन्त आनन्दित होते थे।।42।।

Etāvadhyāpakau prītau
sadā bhīmasya karmaṇā,
Muditau ca vilokyātha
taṁ kṛtye kuśale sthitam.42.

Both these Teachers were always happy
with the works of Bhima.
They rejoiced seeing the Bhima
always engaged in the good deeds.42.

स्नातकोपाधिमान् भूत्वा वृत्त्यर्थं बहुयत्नवान् ।
बड़ौदाराजकारुण्याल् लेफ्टीनेंटपदे स्थितः ॥43॥

बीए की डिग्री प्राप्त कर भीम
नौकरी के लिये बहुत प्रयास करने लगे
और बड़ौदरा के महाराजा की करूणा से
लेफिटिनेंन्ट के पद पर नियुक्त हुए।43।।

Snātakopādhimān bhūtvā
vṛttyarthaṁ bahuyatnavān,
Baḍaudārājakārūṇyāl
lephṭīneṁṭapade sthitaḥ.43.

After receiving the Degree of B.A.
Bhima tried very hard to get a job and
subsequently appointed on the post of Lieutinent
due to the compassion (favour) of
the King of Baroda.43.

पदारूढोऽपि सद्विद्यो हीनवर्णे नृकोपतः[27] ।
स्थातुं न लब्धवान् किंचित् स्थानं यत्र वसेत् सुखम् ॥44॥

ऊँचे पद पर स्थापित (नियुक्त) होने पर भी, उच्च विद्या प्राप्त करने पर भी, हीन वर्ण में होने के कारण लोगों के कोप का भाजन होने पर वे रहने के लिये कोई भी स्थान नहीं प्राप्त कर पाये, जिससे वे सुख से रह सकते।।44।।

Padārūḍho'pi sadvidyo
hīnavarṇe nṛkopataḥ,
Sthātuṁ na labdhavān kiṁcit
sthānaṁ yatra vaset sukham.44.

Even after his appointment on a high position, even after having got higher education, due to his birth in Lower caste he became the target of anger of the people. He was unable to find a place to reside where he could stay happily.44.

---

27. कवि यहां 'नृकोप' का प्रयोग करता है। 'नृ' शब्द का अर्थ है मनुष्य अर्थात् लोग। यह बड़ी विडम्बना की बात है कि लोग हीनवर्णता के कारण गुस्सा करें, होनी तो चाहिये सहानुभूति। किन्तु दुर्भाग्य है ऐसे समाज की मानसिकता का, कि गुस्सा इसलिये कि एक व्यक्ति समाज की घिसीपिटी लकीर मिटाने की जुर्रत कर रहा था।

दिनानि कतिचित् तत्र कार्यं कृत्वोपलब्धवान् ।
प्रवृत्तिं स्वपितुर् भीमो रोगाक्रान्तस्य दुःखितः ।।45।।

कुछ दिनों तक वहाँ कार्य करने के बाद
भीम (डॉ भीमराव रामजी आम्बेडकर) को
रोग से ग्रसित अपने पिता का समाचार मिला
और वे अत्यन्त दुखी हुए।।45।।

Dināni katicit tatra
kāryaṁ kṛtvopalabdhavān,
Pravṛttiṁ svapitur bhīmo
rogākrāntasya duḥkhitaḥ.45.

After working there for some days,
he felt very sad over the news that he got
that his father was seriously ill
as he (his father) was overpowered
by (deadly) deseases.45.

प्रस्थितः स बड़ौदातः शीघ्रं मुंबापुरीं ततः ।
द्रष्टुं स्वं पितरं योऽभूद् भीमो नित्यं हिताशयः ॥46॥

अपने पिता को देखने के लिये
जिनके हित की बात वे हमेशा सोचते थे,
भीम ने शीघ्र ही बड़ोदरा से मुंबई के लिये
प्रस्थान किया।।46।।

Prasthitaḥ sa baḍaudātaḥ
śīghraṁ muṁbāpurīṁ tataḥ,
Draṣṭuṁ svaṁ pitaraṁ yo'bhūd
bhīmo nityaṁ hitāśayaḥ.46.

In order to see his father
whose good wishes
he (Bhima) always cherished,
he proceeded from
Barauda to Mumbāpuri.46.

सूरतेऽवातरद् धूमयानात् क्रेतुं पदार्थकम् ।
मधुरं स्वपितुः प्रीत्या स भीमः पितृवत्सलः ।।47।।

पिता के प्रति अनुराग रखने वाले
भीम अपने पिता के लिये
प्रेम से मिष्ठान खरीदने के लिये
सूरत में रेलगाड़ी से उतरे।।47।।

Sūrate'vātarad dhūma
yānāt kretuṁ padārthakam,
Madhuraṁ svapituḥ prītyā
sa bhīmaḥ pitṛvatsalaḥ.47.

Bhima who had great regard for his father, got down from train at Surat to purchase sweets.47.

अनिश्चित-स्वकार्योऽसौ यानारूढोऽभवन्न हि ।
चचाल यानं वेगात् तत् तत्र तस्मिंस्तलस्थिते ।।48।।

अपने कार्य में अनिश्चित (भीम)(अर्थात् वे सही फैसला नहीं कर पाये कि कितने समय तक ट्रेन रुकेगी और कितने समय में वे ट्रेन के डिब्बे में दुबारा चढ़ पायेगें) पुनः उस गाड़ी में नहीं बैठ पाये क्योंकि वहाँ वे उसी स्थान पर नीचे ही स्थित थे और गाड़ी तेजी से चल पड़ी।।48।।

Aniścita-svakāryo'sau
yānārūḍho'bhavan na hi,
Cacāla yānaṁ vegāt tat
tatra tasmiṁstalasthite.48.

Uncertain in his timing (Bhima) he was unable to board that train again because while he was standing on the platform train moved very fast.48.

अस्यां शताब्द्यां वर्षे तत् ख्रीष्टस्यासीत् त्रयोदशम् ।
दिवसश्च द्वितीयस्य मासस्यासीद् द्वितीयकः ॥49॥

इसी ईसवी शताब्दी (अर्थात् बीसवीं शताब्दी ईसवी) के
तेरहवें वर्ष में यह घटना घटी,
वह दिन दूसरे महीने का दूसरा दिन था।।49।।

Asyāṁ śatābdyāṁ varṣaṁ tat
khrīṣṭasyāsīt trayodaśam,
Divasaśca dvitīyasya
māsasyāsīd dvitīyakaḥ.49.

This event occured in the thirteenth year of
this Century, the day was the second day of
the second month.49.

तत्र भीमो विलंबेन प्राप्तवान् जनकं निजम् ।
ममूर्षुं दुर्बलं दीनं स्वजनैः परिवारितम् ॥50॥

वहाँ भीम अपने पिता के पास देरी से पहुँचे
जो दुर्बल, दीन, अस्वस्थ थे
और अपने स्वजनों से घिरे थे
और उनकी मुत्यु की घड़ी समीप थी।।50।।

Tatra bhīmo vilaṁbena
prāptavān janakaṁ nijam,
Mamūrṣuṁ durbalaṁ dīnaṁ
svajanaiḥ parivāritam.50.

Bhima reached his father there late
who had become weak, lean and thin
and was surrounded by his relatives
and the time of his death was very near.50

तथाभूतं निजं तातं दृष्ट्वाश्रूणि विमोचयन् ।
सशब्दं प्ररुदन् भीमो हृदयेऽत्यनुतापभाक् ।।51।।

अपने पिता को इस प्रकार देख कर
आँसू बहाते हुए और जोर-जोर से रोते हुए
भीम हृदय से अनुताप
(दुख और पछतावा) से भर गये।।51।।

Tathābhūtaṁ nijaṁ tātaṁ
dṛṣṭvāśrūṇi vimocayan,
Saśabdaṁ prarudan bhīmo
hṛdaye'tyanutāpabhāk.51.

Seeing his father in that condition
shedding tears profusely and crying loudly
Bhima became remorseful.51.

भीमं दृष्ट्वा स्वहस्तेन स्पृष्ट्वा स्निग्धविलोचनः ।
भवितुं नित्यनिद्रोऽसौ लोकमेतं विसृष्टवान् ॥52॥

(उनके पिता ने) भीम को स्नेह भरी आँखों से देख कर
अपने हाथों से उन्हें छू कर नित्य निद्रा वाला होकर
इस लोक (मर्त्य लोक) को छोड़ दिया।।52।।

Bhīmaṁ dṛṣṭvā svahastena
spṛṣṭvā snigdhavilocanaḥ,
Bhavituṁ nityanidro'sau
lokametaṁ visṛṣṭavān.52.

(His father) saw him with affectionate eyes
and after touching him with his hands
left this world to the state of peremial.52.

परलोकोन्मुखो रामः स्वां परिश्रमशीलताम् ।
सुमितव्ययशीलत्वं तस्मै दत्त्वा गतो दिवम् ।।53।।

परलोक की ओर उन्मुख रामजी राव
अपनी परिश्रमशीलता और मितव्ययशीलता
उन (भीम) को दे कर स्वर्ग चले गये।।53।।

Paralokonmukho rāmaḥ
svāṁ pariśramaśīlatām,
Sumitavyayaśīlatvaṁ
tasmai dattvā gato divam.53.

Intent on proceeding to the other world
Ramji Rao bestowing upon Bhima
diligence and frugality went to the heaven.53.

दलितां जनतामेतामुद्धर त्वं मतंगज[28] ।
लोके त्वं भव सर्वेषां हीनानां लोकनायकः ।।54।।

हे गजतुल्य पुत्र,
तुम इस दलित जनता का उद्धार करो।
दुनिया में तुम सभी हीन समझे जाने वाले
लोगों के लोकनायक बनो।।54।।

Dalitāṁ janatāmetā
muddhara tvaṁ mataṁgaja,
Loke tvaṁ bhava sarveṣāṁ
hīnānāṁ lokanāyakaḥ.54.

Elephant like son,
You should rescue these oppressed people.
You become the leader of all those
who are despised as low in this world.54.

---

28. 'मतगंज' शब्द का अर्थ हाथी है। 'त' के स्थान पर 'द' का आगम हो जाने से 'मदगंज' भी पढ़ा जा सकता है। यहां कवि का भाव स्पष्ट नहीं है कि भीमराव आम्बेडकर के पिता से मदगंज कहलवा कर वे क्या व्यक्त करना चाहते है। मतंग+ज=मतगंज, इस प्रकार क्या 'मतंग ऋषि का पुत्र तो नहीं कहना चाहते?

चरमं पितृसंदेशं निधाय हृदि सर्वथा ।
भीमो रतः स्वचर्यायां वीरभावेन निश्चलः ॥55॥

उस पिता के अन्तिम सन्देश को
सभी तरह से हृदय में धारण करके भीम
वीर पुरूष की तरह
निश्चल अपने कार्यों में लग गये।।55।।

Caramaṁ pitṛsaṁdeśaṁ
nidhāya hṛdi sarvathā,
Bhīmo rataḥ svacaryāyāṁ
vīrabhāvena niścalaḥ.55.

After holding the last message
of his father in his heart,
Bhima devoted himself to the task
like a brave man.55.

ततः कोलंबियां गन्तुं स लब्धावसरोऽभवत् ।
बड़ौदा-नृपसंलब्धछात्रवृत्त्यवलम्बनः ॥56॥

उसके बाद उन्हें बड़ौदरा के महाराजा से प्राप्त
छात्रवृत्ति के सहारे अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय मे
जाने का अवसर मिला।।56।।

Tataḥ Kolaṁbiyāṁ gantuṁ
sa labdhāvasaro'bhavat,
Baraudā-nṛpasaṁlabdha
chātravṛttyavalambanaḥ.56.

Thereafter he got a chance
to go to Columbia University of America
with the help of the scholarship granted by
the King of Baroda.56.

स्वकीयममरीकायां समाप्याध्ययनक्षणम् ।
करिष्ये दश वर्षाणि राजसेवां यथाबलम् ।।57।।

अमेरिका में अपने अध्ययन के समय को पूरा करके
मैं यथाशक्ति दस वर्षों तक राजसेवा करूँगा।।57।।

Svakīyamamarīkāyāṁ
samāpyādhyayanakṣaṇam,
Kariṣye daśa varṣāṇi
rājasevāṁ yathābalam.57.

After completing the period of
my study in America,
I shall do royal state service
as per my capability for ten years,57.

इति प्रतिज्ञालेखं च दत्तवान् सुमतिर्निजम् ।
महाराजाय संप्रीत्यार्पयच्च कृतवेदिताम् ॥58॥

इस प्रकार उस अच्छी बुद्धि वाले (सद्बुद्धि)
भीम ने महाराजा को प्रेम के साथ
अपना प्रतिज्ञा-लेख दिया और
उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।।58।।

Iti pratijñālekhaṁ ca
dattavān sumatirnijam,
Mahārājāya saṁprītyā
arpayacca kṛtaveditām.58.

Thus that wise Bhima (Bhimarao Ambedkar)
pledged to the King pleasingly
and expressed his gratitude towards him.58.

संप्रवृत्ते शताब्द्यां स वत्सरे च त्रयोदशे ।
मासस्य सप्तमस्यैकविंशे हि दिवसे सुधी ॥59॥

इस वर्तमान शताब्दी के तेरहवे वर्ष में सातवें महीने के
इक्कीसवे दिन वे बुद्धिमान् ...।।59।।

Saṁpravṛtte śatābdyāṁ sa
vatsare ca trayodaśe,
Māsasya saptamasyaika
viṁśe hi divase sudhī.59.

On the twentyfirst day of the
seventh month of the thirteenth year of
this present century that wise man...59.

न्यूयार्कं[29] प्राप्य विद्याया निलयं कोलंबियाभिधम् ।
प्रविश्य निरतः प्राप्तुं पर्युपाधिं प्रयत्नवान् ॥60॥

न्यूयार्क के कोलंबिया नामक विश्वविद्यालय में पहुँच कर
और उच्च उपाधि प्राप्त करने के प्रयत्न में लग गये॥60॥

Nyūyārkaṁ prāpya vidyāyā
nilayaṁ Kolaṁbiyābhidham,
Praviśya nirataḥ prāptuṁ
paryupādhiṁ prayatnavān.60.

After reaching the University named Columbia
he devoted himself to the efforts of achieving
higher degree in education.60.

---

29. श्लोक संख्या 59 और 60 युग्म हैं। अतः साथ-साथ पढ़ें।

विदेशजीवनं तेनानुभूतं गतिशीलवत् ।
विचित्रमपराधीनं भेदभावविवर्जितम् ॥61॥

विदेश के जीवन को जो उन्होंने अनुभव किया
वह गतिशील था।
जो उनको विचित्र लगा,
जो स्वाधीन था और भेदभाव से रहित था।।61।।

Videśajīvanaṁ tenā
nubhūtaṁ gatiśīlavat,
Vicitramaparādhīnaṁ
bhedabhāvavivarjitam.61.

The Life he experienced in the foreign land
was very fast and energetic.
To him it was strange, free from bondages,
tabooes and disparities.61.

भोजने पंक्तिभेदं स नैवापश्यत् स्वदेशवत् ।
पाश्चात्यानां समाजं स ददर्श बहुधोन्नतम् ॥62॥

अपने देश में भोजन के समय
जो पांत-भेद किया जाता है,
वह उन्होंने वहां नहीं देखा।
पाश्चात्य लोगों के उस समाज को
उन्होने बहुत प्रकार से उन्नत देखा।।62।।

Bhojane paṁktibhedaṁ sa naivāpaśyat
svadeśavat,
Pāścātyānāṁ samājaṁ sa dadarśa
bahudhonnatam.62.

He did not notice any queue discrimination
at community dinner,
as he found in his own country.
He saw the society of the western people
which developed in many ways.62.

संकीर्णं जीवनं तेषां नासीत् पाषण्डताकुलम् ।
उत्थानाय च सर्वेषां तत्रासीद् विपुलः श्रमः ॥63॥

पाखंड से व्याकुल उनका जीवन संकीर्ण नहीं था।
वहां पर सभी लोगों के उत्थान के लिये
विपुल श्रम किया जाता था (करने की परम्परा थी)।।63।।

Saṁkīrṇaṁ jīvanaṁ teṣāṁ
nāsīt pāṣaṇḍatākulam,
Utthānāya ca sarveṣāṁ
tatrāsīd vipulaḥ śramaḥ.63.

Their life did not reflect narrow mindedness nor was fed up with hypocritical believes and practices. There they have the practice of hard labour for the upliftment of all people.63.

प्रभावितः समाजेन तेन नव्येन धीघनः ।
एवं हि भारतेऽप्यस्तु स चिन्तनपरोऽभवत् ॥64॥

उस नये समाज से बुद्धिमान् (बुद्धि की मूर्ति)
वे भीमराव अम्बेडकर अत्यधिक प्रभावित हुए
और ऐसा ही हमारे भारत देश में भी हो
ऐसा उनका चिन्तन हुआ।।64।।

Prabhāvitaḥ samājena
tena navyena dhīghanaḥ,
Evaṁ hi bhārate'pyastu
sa cintanaparo'bhavat.64.

The intelligent one (literally stuffed with intellect)
that Bhimarao Ambedkar was highly impressed
with that new society and the same should take
place in India was his immediate thought.64.

स्वतातसुहृदं पत्राचारेणाभिदिशद् दिशम् ।
कर्तुं लोकसमुत्थानं दलितानां प्रयत्नतः ॥65॥

उन्होंने पत्रों के माध्यम से
अपने पिता के मित्र को प्रयत्न के साथ
दलितों का समुत्थान करने की दिशा बताई।।65।।

Svatātasuhṛdaṁ patrā
cāreṇābhidiśad diśam,
Kartuṁ lokasamutthānaṁ
dalitānāṁ prayatnataḥ.65.

He guided his father's friend
as to what should be the way to
effortlessly uplift the downtrodden.65.

यथा जन्मप्रदातारौ जननी-जनकौ भुवि ।
तथैव पुत्रभाग्यस्य तौ निर्माणकरौ ननु ॥66॥

इस संसार में जैसे मॉ और पिता बच्चे को जन्म देते हैं ,
उसी प्रकार वे दोनों बेटे के भाग्य का भी
निर्माण करने वाले भी होते हैं।।।66।।

Yathā janmapradātārau
jananī- janakau bhuvi,
Tathaiva putrabhāgyasya
tau nirmāṇakarau nanu.66.

As the mother and father
give birth to a child in this world,
so are they both
the makers of the fate of the son.66.

विद्यैव कुरुते लोकं सर्वभावसमुन्नतम् ।
उच्चो भवति नीचोऽपि प्राप्य सारस्वर्त[30] महः ॥67॥

विद्या ही लोगों को हर प्रकार से
समुन्नत बनाती है।
सारस्वत महामात्य को पा कर कोई उच्च होता है,
कोई नीच भी।।।67।।

Vidyaiva kurute lokaṁ
sarvabhāvasamunnatam,
Ucco bhavati nīco'pi
prāpya sārasvataṁ mahaḥ.67.

It is the learning alone
that uplifts people in every way.
One becomes high or low due to the
greatness of wisdom and speech.67.

---

30. यहां 'सारस्वत' से किसी देवी से प्राप्त ज्ञान का तात्पर्य नहीं है। सरस्वती का अर्थ वाणी, ज्ञान आदि भी होता है।

तस्मादतिप्रयत्नेन लब्धशिक्षाः शुभोदयाः ।
अन्त्यजा अपि कर्तव्या यथाशक्ति यथाक्षणम् ॥68॥

इसलिये इन अन्त्यजों को भी
यथाशक्ति और यथा अवसर
अत्यधिक प्रयत्न से शिक्षा-प्राप्त और
शुभ-उदय (शुभोदय) बनाया जाना चाहिये।।68।।

Tasmādatiprayatnena
labdhaśikṣāḥ śubhodayāḥ,
Antyajā api kartavyā
yathāśakti yathākṣaṇam.68.

Therefore these outcaste people should also be
very effortfully made educated, progressive
and forward-looking to the fullest extent
and as per the occasion.68.

न हि विद्यां विना काचिद् अन्या शक्तिर्धरातले ।
हीनान् कर्तुं महाभागान् गुणकर्ममहत्तया ॥69॥

इस पृथ्वी पर विद्या के अलावा
और कोई शक्ति नहीं है, जो इन निम्न लोगो को
गुण व कर्म की महत्ता से
भाग्यवान बना सके।।69।।

Na hi vidyāṁ vinā kācid
anyā śaktirdharātale,
Hīnān kartuṁ mahābhāgān
guṇakarmamahattayā.69.

There is no power on this earth
except thelearning which can make
these low people fortune-rich
through the merits of qualities and deeds.69.

अर्थेन योच्चता लोके सा क्षणप्रभया समा ।
धनान्यागत्य यान्त्येव ते तेऽर्था नु प्रमादतः ॥70॥

धन दौलत के द्वारा इस दुनिया में जो उच्चता मिलती है
वह क्षणिक प्रभा वाली है,
क्योंकि धन आ कर चला जाता है
और उसी प्रकार प्रमाद के कारण
वे वस्तुएं (जो धन से अर्जित होती हैं) भी।।70।।

Arthena yoccatā loke
sā kṣaṇaprabhayā samā,
Dhanānyāgatya yāntyeva
te te'rthā nu pramādataḥ.70.

The high position that is achieved with riches is
short-lived, because wealth goes away after coming
and so do go away the objects
(achieved through wealth) due to laxity.70.

स्थिरा भवति विद्या तु नक्षत्राणि यथात्र खे ।
खद्योतकल्पा भवति धनजाभा चलाचला ।।71।।

जैसे नक्षत्र आसमान में स्थिर होते हैं
उसी प्रकार विद्या भी स्थिर है।
धन से उत्पन्न प्रकाश चंचल है,
वह जुगनू की तरह है।।71।।

Sthirā bhavati vidyā tu
nakṣatrāṇi yathātra khe,
Khadyotakalpā bhavati
dhanajābhā calācalā.71.

As the stars are stable in the sky
so is learning here.
The light of wealth is (uncertain),
like a fire-fly.71.

विद्यायां ये स्थिता लोकास् ते सदैव महाशयाः ।
ते विभूतिसमापन्ना भवन्ति बहु-विश्रुताः[31] ॥72॥

जो लोग विद्या पर स्थित हैं
वे सदैव महान् आशय (उद्देश्य) वाले होते हैं।
वे वैभव से युक्त होते हैं और
अत्यधिक ज्ञानवान होते हैं।।72।।

Vidyāyāṁ ye sthitā lokās
te sadaiva mahāśayāḥ,
Te vibhūtisamāpannā
bhavanti bahu-viśrutāḥ.72.

The people relying on learning are always of high aim. They are endowed with grandeur and are highly well-versed.72.

---

31. 'विश्रुत' शब्द का शाब्दिक अर्थ हुआ वह व्यक्ति जिसने सुन सुन कर अत्यधिक ज्ञान अर्जित किया हो। प्राचीन काल में जब लिखने पढ़ने का चलन कम था, लोग सुन सुन कर ही विद्या अर्जित करते थे। उन्हें 'श्रुत' कहा जाता था। उनमें जो विशिष्ट थे वे विश्रुत कहे जाते थे। आज भी सुन कर ज्ञान प्राप्त करने की परंपरा जीवित है।

इत्येवं सुमतिः श्राम्यन् सारस्वतधनाप्तये ।
स विद्याधिपतित्वेन चक्रवर्तित्वमाप्तवान् ॥73॥

इस प्रकार वे सुमति (भीमराव अम्बेडकर)
ज्ञान और धन की प्राप्ति के लिये श्रम करने लगे।
उन्होंने विद्या के आधिपत्य द्वारा
चक्रवर्ती के पद को प्राप्त किया।।73।।

Ityevaṁ sumatiḥ śrāmyan
sārasvatadhanāptaye,
Sa vidyādhipatitvena
cakravartitvamāptavān.73.

He (Bhimarao Ambedkar) possessing
great intellect started working laboriously
for the knowledge and wealth.
He attained world rulership with the help of
his knowledge authority..73.

ततः स लन्दनं गत्वा लब्ध्वा च प्राग्विवाकताम् ।
प्रत्यागच्छत् स्वदेशं हि सुजनैरभिनन्दितः ॥74॥

उसके बाद उन्होंने (भीमराव अम्बेडकर) लंदन जा कर
पूर्वविद्यावारिधि-परीक्षा अर्जित की।
वे स्वदेश लौट आये और
सज्जनों के द्वारा उनका अभिनन्दन हुआ।।74।।

Tataḥ sa Landanaṁ gatvā
labdhvā ca prāgvivākatām,
Pratyāgacchat svadeśaṁ hi
sujanairabhinanditaḥ.74.

Thereafter he (Bhimarao Ambedkar) went to
London and achieved the Pre-Ph.D degree.
He came back to his native country
and was felicitated by the good people.74.

स सर्वानागतान् स्वस्य प्रशंसनपराञ्जनान् ।
धन्यवादैर्नमोवाक्यैः सादरं पर्यपूजयत् ॥75॥

उन सभी लोगों का उन्होंने
धन्यवाद व नमस्कार से आदर के साथ सत्कार किया
जो वहां आये थे (स्वागत समारोह में)
और उनकी प्रशंसा कर रहे थे।।75।।

Sa sarvānāgatān svasya
praśaṁsanaparāñjanān,
Dhanyavādair namovākyaiḥ
sādaraṁ paryapūjayat.75.

He honoured with thanks and greetings
all those people who had come in his felicitation
and had praised him.75.

संप्रकाश्य निजां तत्र स्वकीयां कृतवेदिताम् ।
धीरः स्म प्रतिजानीते सेवितुं दलिताञ्जनान् ॥76॥

वहां पर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के बाद
उस बुद्धिमान् व्यक्ति ने दलितों की सेवा करने की
प्रतिज्ञा की।।।76।।

Saṁprakāśya nijāṁ tatra
svakīyāṁ kṛtaveditām,
Dhīraḥ sma pratijānīte
sevituṁ dalitāñjanān.76.

There after expressing his gratitude
that wise man took a pledge to serve the
downtrodden people.76.

कर्तुमान्दोलनं स्वस्य लोकस्योन्नतिकाम्यया ।
करोति स्म व्रतं धीरः स्वजीवन-समर्पणात् ॥77॥

अपने लोगो की उन्नति की इच्छा से
आन्दोलन करने के लिये
उस बुद्धिमान् ने अपने जीवन का समर्पण करने का
व्रत लिया।।77।।

Kartumāndolanaṁ svasya
lokasyonnatikāmyayā,
Karoti sma vrataṁ dhīraḥ
svajīvana-samarpaṇāt.77.

With a wish to uplift his own people
and in order to start a movement
that wise man took a vow
with full dedication of his life.77.

मुक्ता भवेयुरस्पृश्यास्त्यक्त्वा स्वां दुर्गतां दशाम् ।
इत्यर्थं जीवनं मे स्याद् इत्यभूत्तन्मनोरथः ॥78॥

अछूत लोग अपनी दुर्गति वाली दशा त्याग (छोड़)
कर मुक्त हों इस प्रयोजन वाला मेरा जीवन हो,
इस प्रकार का उनका (भीमराव आम्बेडकर)
मनोरथ हुआ ।।78।।

Muktā bhaveyuraspṛśyāst
yaktvā svāṁ durgatāṁ daśām,
Ityarthaṁ jīvanaṁ me syād
ityabhūttanmanorathaḥ.78.

(Bhimarao Ambedkar) developed his earnest desire,
"Let the untouchables discard and forsake their
wretched condition and my life should be devoted
to that cause".78.

मुंबापुर्यामुषित्वा स दिनानि कतिचित् सुधीः ।
बड़ौदानृपतेः सेवां कर्तुं लेखं निजं स्मरन् ॥79॥

उस बुद्धिमान् ने कुछ दिनों तक मुम्बई पुरी में रह कर
बड़ौदा के राजा की सेवा करने वाले
उस लेख को याद किया॥79॥

Mumbāpuryāmuṣitvā sa
dināni katicit sudhīḥ,
Baraudānṛpateḥ sevāṁ
kartuṁ lekhaṁ nijaṁ smaran.79.

After spending some days in Mumbai
remembered the bond that he had signed to serve
the King of Baroda.79.

जगाम तत्र किं त्वासीत् सर्वैरेव प्रवारितः ।
स्थातुं वस्तुं च केनापि साहाय्यं न कृतं तदा ॥80॥

वहां वे गये
किन्तु वे सभी के द्वारा वंचित हुए
(उनके साथ सभी ने धोखा किया)।
तब वहां ठहरने व रहने में किसी ने भी
सहायता नहीं की।।80।।

Jagāma tatra kiṁ tvāsīt
sarvaireva pravāritaḥ,
Sthātuṁ vastuṁ ca kenāpi
sāhāyyaṁ na kṛtaṁ tadā.80.

He went there,
but he was cheated there by all.
At that time no one helped him
to stay and reside there.80.

महाराजो बड़ौदाया ऐच्छत् तं सुमतिं स्थितम् ।
पदे समुचिते कर्तुं सेवां योग्यतयान्वयाम् ॥81॥

बड़ौदा के महाराजा उनको (उस बुद्धिमान् को)
स्थापित करना चाहते थे।
योग्यता के अनुसार उनको उचित पद पर
सेवा करने के लिये रखना चाहते थे॥81॥

Mahārājo Baraudāyā
aicchat taṁ sumatiṁ sthitam,
Pade samucite kartuṁ
sevāṁ yogyatayānvayām.81.

The King of Baroda desired to see him
posted on any suitable position
so that he could serve
according to his abilities.81.

स भवेदर्थमन्त्रीति नृपतेर्मानसेऽभवत् ।
नियुक्तः सैन्यसाचिव्ये प्रारंभाय शुभाय च ॥82॥

राजा के मन में विचार आया कि
वे (डॉ भीमराव आम्बेडकर) वित्त मंत्री बनें।
फिर भी उन्होंने शुभ प्रारम्भ के लिये
सैन्य सचिव के रूप में उनको नियुक्त किया।।82।।

Sa bhavedarthamantrīti
nṛpatermānase'bhavat,
Niyuktaḥ sainyasācivye
prāraṁbhāya śubhāya ca.82.

The King thought that
he (Dr. Bhimarao Ambedkar) should become
the Finance Minister, but even then
he appointed him as the Military Secratry
to start with as an auspicious beginning.82.

स हि लब्धपदोऽप्येवं शान्तिसौख्यं न लब्धवान् ।
स्पृश्यास्पृश्यविषाक्तेऽभून्मण्डले परिपीडितः ॥83॥

इस पद पर नियुक्त किये जाने पर भी
उन्होंने न तो शान्ति प्राप्त की और न सुख।
उस मण्डल में छूत व अछूत का जहर व्याप्त था।
उससे वे पूरी तरह दुखी हुए॥83॥

Sa hi labdhapado'pyevaṁ
śāntisaukhyaṁ na labdhavān,
Spṛśyāspṛśyaviṣākte
'bhūnmaṇḍale paripīḍitaḥ.83.

Even though he was appointed on that post
he could neither get the peace nor happiness.
He was extremely afflicted
as that region was permeated with
the poison of touchability and untouchability..83.

हिन्दुभिर्या कृता तत्रावमानजननी क्रिया ।
अनुकृतेव सा ख्रीष्टैर्यवनैः पारसीकजैः ॥84॥

हिन्दुओं ने जो उनके साथ अपमानजनक कार्य किये
ईसाइयों, पारसियों व मुसलमानों ने भी
उसी की नकल की॥84॥

Hindubhiryā kṛtā tatrā
vamānajananī kriyā,
Anukṛteva sā khrīṣṭair
yavanaiḥ parasīkajaiḥ.84.

The act of dishonouring him
(Dr. Bhimarao Ambedkar)
done by the Hindus was followed by
Christians, Muslims and Parsis.84.

तत्र खिन्नः स प्रत्यागात् पुनर्मुंबापुरीं सुधीः ।
सिडेनहम्महापीठे प्राध्यापकोऽभवत् तदा।।85।।

वे विद्वान वहां दुखी होने पर
दुबारा मुम्बई पुरी लौट आये
और सिडेनहम महाविद्यालय में
प्राध्यापक नियुक्त हो गये।।85।।

Tatra khinnaḥ sa pratyāgāt
punarmuṁbāpurīṁ sudhīḥ,
Siḍenahammahāpīṭhe
prādhyāpako'bhavat tadā.85.

That learned Scholar having been unhappy there returned to Mumbai city and was appointed as Lecturer[32] in the Sidenaham College.85.

---

32. किसी भी महाविद्यालय में पहली नियुक्ति प्राध्यापक, प्रवक्ता के रूप में हुआ करती थी। यह स्थिति प्रायः आजतक चली आ रही है। किन्तु आम जनता प्रत्येक प्राध्यापक को प्रोफेसर समझता है। प्रोफेसर विश्वविद्यालय का सर्वोच्च आकादमिक पद है। बाबा साहेब के जीवनी-लेखक इस भ्रम से मुक्त नहीं हैं।

सोऽभूदाकर्षणस्थानं छात्राणां तत्र सर्वतः ।
अछूतोद्धारणे चापि मनस्तस्याभवद् दृढम् ॥86॥

वे वहां छात्रों के आकर्षण का केन्द्र बने।
वहीं उन्होंने अछूतोद्धार के लिये
अपना मन दृढ़ किया॥86॥

So'bhūdākarṣaṇasthānaṁ
chātrāṇāṁ tatra sarvataḥ,
Achūtoddhāraṇe cāpi
manastasyābhavad dṛḍham.86.

There he became
the centre of attraction of students.
There he made up his mind
for the upliftment of untouchables.86.

साहूछत्रपतिं दृष्ट्वा तादृक्कृत्ये स्पृहान्वितः ।
स तेन संगतो मूकनायकेऽभूत्[33] सहायकः ॥87॥

साहू छत्रपति महाराजा को देखकर
उनके जैसी क्रिया की उनकी इच्छा हुई
और वे उनके (साहूछत्रपति महाराज के) साथ
मूकनायक बनने में सहायक हुए॥87।

Sāhūchatrapatiṁ
dṛṣṭvā tādṛkkṛtye spṛhānvitam,
Sa tena saṁgato mūka-
nāyake'bhūt sahāyakaḥ.87.

After observing Sahu Chatrapati Maharaja
he wished to do work like him and
he became an associate to make him
Mukanāyaka (leader of the dumb people).87.

---

33. यहां 'मूकनायक' शब्द के दो अर्थ निहित हैं। एक तो 'मूक' से तात्पर्य दलित लोगों से है, जो गूंगों की तरह सब कुछ सहते हुये बोल नहीं पाते, अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते। अत: ऐसे लोगों का नायक बनना। यह बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर ने साहू छत्रपति महाराज से सीखा। और दूसरा यह कि 'मूकनायक' नामक पत्रिका के संचालन में सहभागिता करना।

एवं स भृतको भीमश्चित्ते चिन्तनतत्परः ।
अर्थशास्त्राध्ययने स्वे विधातुं परिपूर्णताम् ।।88।।

इस प्रकार वे (भीमराव आम्बेडकर) सेवा में लगे हुए
अपने अर्थशास्त्र के अध्ययन को पूरा करने के
विचार में लग गये।।88।।

Evaṁ sa bhṛtako Bhīmaś
citte cintanatatparaḥ,
Arthaśāstrādhyayane sve
vidhātuṁ paripūrṇatām.88.

In this way while engaged in service,
he started thinking of completion of
his study of Economics.88.

लन्दनं पुनरायातः संप्राप्य प्राग्विवाकताम् ।
निवृत्य भारते नैव पुनः सेवापरोऽभवत् ॥89॥

पीएचडी की पूर्व परीक्षा में वे पुनः लन्दन आये
और सफलता प्राप्त की और वहां से लौटने के बाद
उन्होंने दोबारा भारत में नौकरी नहीं की।।89।।

Landanaṁ punarāyāya
saṁprāptaḥ prāgvivākatām,
Nivṛtya Bhārate naiva
punaḥ sevāparo'bhavat.89.

After attaining success in pre-Ph.D. examination,
He came to London again
and on return to India
he never joined any service.89.

बहिष्कृतहितां तत्र सभां संस्थाप्य यत्नवान् ।
स न्यायकुशलो लेभे न्यायाधीश-प्रसन्नताम् ॥90॥

बहिष्कृतों के हित वाली संस्था
स्थापित करके यत्न करते हुये
वे न्याय कुशल को गये और
न्यायाधीश की प्रसन्नता प्राप्त की।।90।।

Bahiṣkṛtahitāṁ tatra
sabhāṁ saṁsthāpya yatnavān,
Sa nyāyakuśalo lebhe
nyāyādhīśa-prasannatām.90.

After establishing an organization
for the welfare of the outcaste people
he became legal expert and received
appreciation from Magistrate cum Judge.90.

बलात् स्वबुद्धितर्कस्य पाशबन्धेन दण्डितम् ।
जनं विमोचयामास लोकमेतं प्रहर्षयन् ।।91।।

कैद की सजा से दण्डित व्यक्ति को
उन्होंने अपनी बुद्धि और तर्क के बल से छुड़ा लिया
और इस प्रकार लोग इससे बहुत खुश हुए।।91।।

Balāt svabuddhitarkasya
pāśabandhena daṇḍitam,
Janaṁ vimocayāmāsa
lokametaṁ praharṣayan.91.

He got released a man who
had been sentenced to Jail through
his power of intellect and argumentation
and thus made people joyous and happy.91.

ततः परमनाथानां दंडितानां भवोऽभवत् ।
स भीमः सर्वभावेन प्रथितः पृथिवीतले ॥92॥

उसके बाद अनाथ (असहाय)
दण्डित लोंगों के सहायक हुए
और वे (भीमराव आम्बेडकर)
पृथ्वी तल पर (इस दुनिया में)
सब तरह से प्रशंसित हुए।।92।।

Tataḥ paramanāthānāṁ
daṅḍitānāṁ bhavo'bhavat,
Sa Bhīmaḥ sarvabhāvena
prathitaḥ pṛthivītale.92.

Thereafter he became
the patron of the disowned punished people
and thus Bhima received admiration
in every way on the this earth.92.

लोकास्तमुपागच्छन् हि दरिद्रा दुःखपीडिताः ।
न्यायालयात् परित्राणं प्राप्तुं तस्यानुभावतः ॥93॥

दुख से पीड़ित दरिद्र लोग उनके अनुभाव (कृपा) से
न्यायालयों से राहत प्राप्त करने के लिये
उनके पास जाने लगे।।93।।

Lokāstamupāgacchan hi
daridrā duḥkhpīḍitāḥ,
Nyāyālayāt paritrāṇaṁ
prāptuṁ tasyānubhāvataḥ.93.

The poor and suffering people
afflicted with sorrow
approached him to get relief from
The Court with the help of his favour.93.

आहारे च विहारे च सरलः स स्वभावतः ।
कौपीनवसनो नित्यं रमते स्म निजे गृहे ॥94॥

आहार और विहार में स्वभाव से
वे (भीमराव आम्बेडकर) सरल
अपने घर में सदैव कौपीन वस्त्र (कच्छे बनयान)
में रहा करते थे।।94।।

Āhāre ca vihāre ca
saralaḥ sa svabhāvataḥ,
Kaupīnavasano nityaṁ
ramate sma nije gṛhe.94.

Simple by nature
in his food habits and entertainment,
he enjoyed staying at home
in lion-clothes alone..94.

अतिथीनां प्रसादाय स स्वयं पाचकोभवन् ।
श्रमेण महता धीरः प्रददौ पानभोजनम् ॥95॥

अतिथियों की खुशी के लिये
बुद्धिमान् वे स्वयं खाना पकाते हुए
बड़े महान श्रम (बड़ी मेहनत) से
उन्हें खाना और पानी दिया करते थे।।95।।

Atithīnāṁ prasādāya sa
svayaṁ pācakobhavan,
Śrameṇa mahatā dhīraḥ
pradadau pānabhojanam.95.

With a view to please his guests
he used to hard work in cooking himself
and did serve them
with food and drinks (not alcoholic)..95.

प्रोक्षयन्नाननं स स्वं जन-लोचनवारिणा ।
अगच्छत् तस्य संप्राप्तुममोघां सुप्रसन्नताम् ।।96।।

लोगों की आखों के पानी से
अपने मुँह को धोते (पोछते) हुए
उन्होने विफल न होने वाली लोगों की
प्रसन्नता प्राप्त की (शाब्दिक अर्थ में,
लोगों की प्रसन्नता तक गये) ।।96।।

Prokṣayannānanaṁ sa svaṁ
jano-locanavāriṇā,
Agacchat tasya saṁprāptu
mamoghāṁ suprasannatām.96.

Washing his face with the tears
from the eyes of the people,
he attained happiness
derived from unfailing success.96.

चकृवान् स हि सर्वस्य सेवां निजबलान्वयाम् ।
निराशो नाभवत् कोऽपि दीनस्तस्य पुरःस्थितः ॥97॥

अपने बल के अनुसार उन्होंने सबकी सेवा की।
उनके सामने खड़ा (आया) हुआ
कोई भी गरीब निराश नहीं हुआ।।97।।

Cakṛvān sa hi sarvasya
sevāṁ nijabalānvayām,
Nirāśo nābhavat ko'pi
dīnastasya puraḥsthitaḥ.97.

He did service to everyone
as per his capability.
Any poor person standing in front of him
never returned disappointed.97.

भारताय स हि प्रादाद् विमलां स्मृतिसंहिताम् ।
मनुना या न दत्तात्र याज्ञवल्क्येन नापि या ॥98॥

उन्होंने भारत देश के लिये
निर्दोष स्मृति ग्रंथ (धर्म शास्त्र) दिया (लिखा)
जैसा कि (निर्दोष) मनु द्वारा नहीं दिया गया था
और न ही याज्ञवल्क के द्वारा।।98।।

Bhāratāya sa hi prādād
vimalāṁ smṛtisaṁhitām,
Manunā yā na dattātra
yājñavalkyena nāpi yā.98.

For the Country of India
he gave (prepared) faultless Smriti (Dharma
Shastra, Book of Law) parallel to which was
neither prepared by Manu nor by Yajnavalka.98.

भारते जनता यावत्स्थास्यतीह धरातले ।
तावद् भीमस्य वार्ता सा चरिष्यति चरिष्यति ।।99।।

इस पृथ्वी पर भारत में जब तक जनता रहेगी
तब तक भीम (डॉ0 भीमराव रामजी आम्बेडकर)की
वह वार्ता चलती रहेगी,चलती रहेगी।।99।।

Bhārate janatā yāvat
sthāsyatīha dharātale,
Tāvad Bhīmasya vārtā
sa cariṣyati cariṣyati.99.

As long as the people live
on (this planet) earth (and) in India,
that long Bhīma's tedings will proceed
on and on.99.

जय भीम महाभाग त्रिरत्नशरणंगत ।
जयोऽस्तु सततं तेषां ये भवन्ति तवानुगाः ॥100॥

तीन रत्नों की शरण में गये हुए
महानुभाव भीम की जय हो।
जो आपके अनुगामी होंते हैं
सदैव उनकी जय हो।।100।।

Jaya Bhīma Mahābhāga
Triratnaśaraṇaṅgata,
Jayo'stu satataṁ teṣāṁ
ye bhavanti tavānugāḥ.100.

You who has gone to the Refuge of Tri-ratna,
Bhīma the Great spirited One be victorious.
Those who follow you (in the path of Triratna)
be victorious.100

प्रज्ञायां चावदाने सततमतुलिते सिंहलद्वीपभूमौ,
विद्यालंकारनाम्नि प्रथित इह परे चाश्रमे सौगतानाम् ।
श्रीधर्मानन्दपादैः श्रमणवरमते दीक्षितस्य द्विजातेर्,
एतद् वै शान्तिभिक्षोः कृतमिह लभतां पाठकेषु प्रतिष्ठाम् ॥101॥

समाप्तं अम्बेडकरभीमाशतकम् ॥

कृतिरियं सुगतकविरत्नस्य शान्तिभिक्षुशास्त्रिणः
।।29-11-1990।।

सिंहलद्वीप की भूमि पर प्रज्ञा और योगदान में सदैव
अतुलनीय विद्यालंकार नामक बौद्धों के आश्रम में
आदरणीय श्री धर्मानन्द के द्वारा श्रमणों के उच्च कोटि
के मत में दीक्षित ब्राहमण कुल में पैदा हुए शान्ति
भिक्षु की यह कृति पाठकों में प्रतिष्ठा प्राप्त
करे।।101।।
सुगतकविरत्न शान्तिभिक्षुशास्त्री की कृति
भीमाम्बेडकरशतकम् समाप्त।
।।29-11-1990।।

Prajñāyāṁ cāvadāne satatamatulite
siṁhaladvīpabhūmau,

Vidyālaṁkāranāmni prathita iha pare cāśrame
saugatānām.

Śrīdharmānandapādaiḥ śramaṇaparamate
dīkṣitasya dvijāter,

Etad vai śāntibhikṣoḥ kṛtamiha labhatāṁ pāṭhakeṣu
pratiṣṭhām.101.

Samāptaṁ Ambedkarabhīmāśatakam.

Kṛtiriyaṁ Sugatakaviratnasya
Śāntibhikṣuśāstriṇaḥ

॥ ***29-11-1990*** ॥

On the Singhaladveep, in the Buddhist Vihar
named Vidyalaṁkāra, always uncomparable in
wisdom and contribution, ordained by Sri
Dharmanand to the best faith of the Sramanas and
the one born -- borm in a Brahman family, this
work of Santi Bhiksu may get appreciation
among the readers.101.
Bhīmāmbedkar **Ś**atakaṁ,
the work of Sugatakaviratana
Santibhiksu Shastri ends here.

परिशिष्ट

चित्र-वीथि

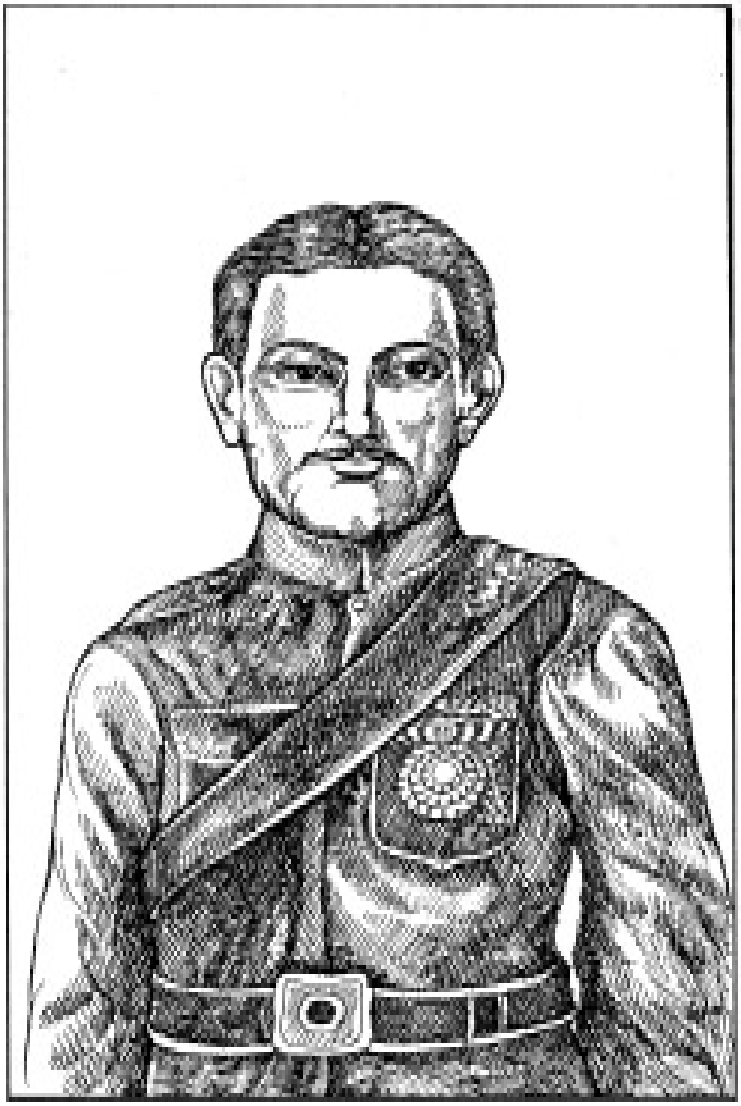

सूबेदार रामजी मालोजीराव सकपाल
(सूबेदार रामजी आंबेडकर)

सूबेदार रामजी-भीमाबाई के घर में भीमराव का जन्म एक सैनिकी वातावरण में हुआ था।

भीमराव के मन-मस्तिष्क पर सन्त कबीर का प्रभाव था, क्योंकि उनका परिवार कबीरवाणी से सरोबार रहता था।

भीमाबाई के निधन से सूबेदार रामजी राव को बहुत दुख पहुंचा

क्रिकेट प्रेमी भीमराव खेल के मैदाम में

भीमराव अपने हाथों से पानी लेकर नहीं पी सकते थे।

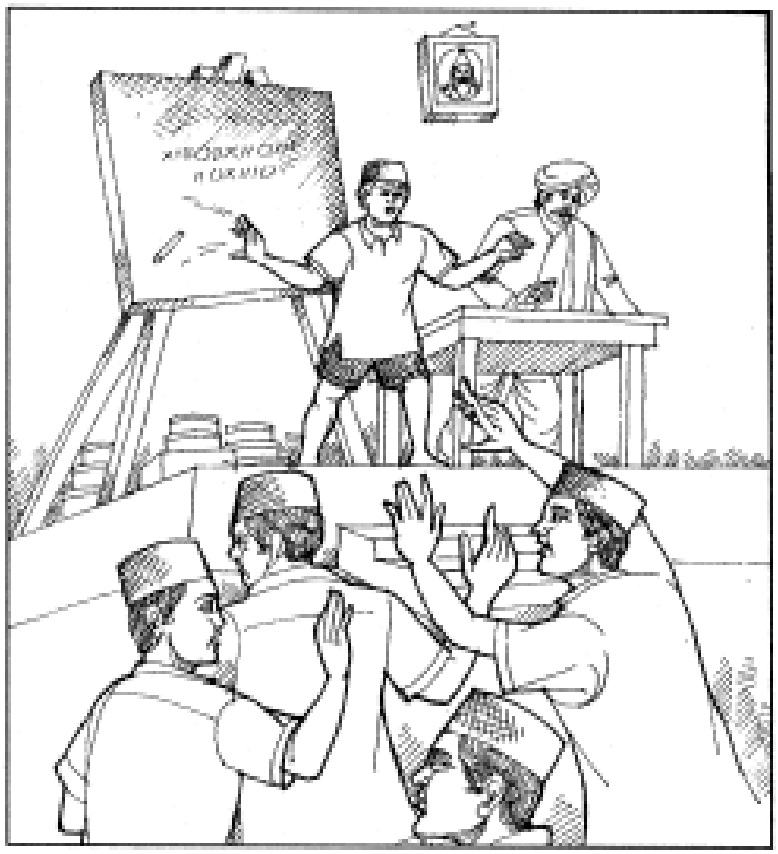

उनके द्वारा कक्षा में प्रवेश पर छात्रों का विरोध

सर, पढ़-लिखकर मैं क्या करूँगा,
यह पूछने का काम आपका नहीं है।

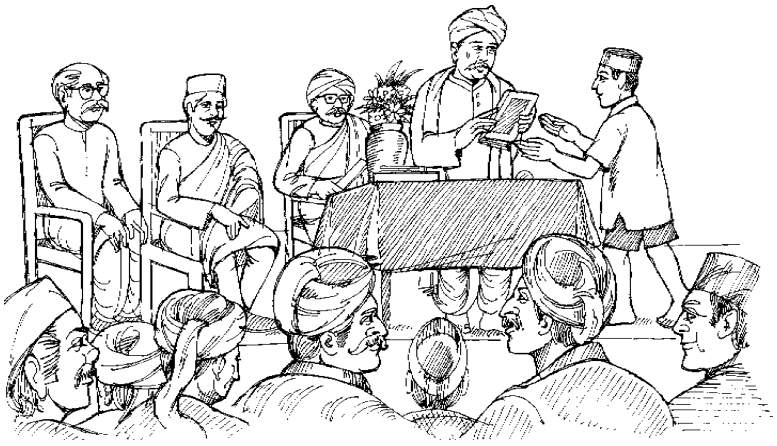

केलुस्कर द्वारा 'बुद्ध चरित्र' पुस्तक भेंट

भीमराव और रमाबाई मंगल परिणय के अवसर पर

अध्ययन के लिये उन्हे अपने पारिवारिक जीवन व अन्य सुख-सुविधाओं की भी अवहेलना करनी पड़ी

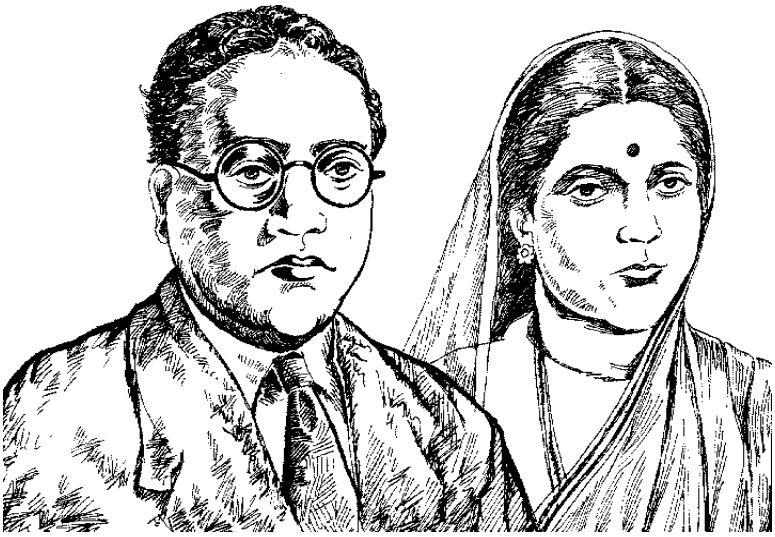

रमाबाई के साथ

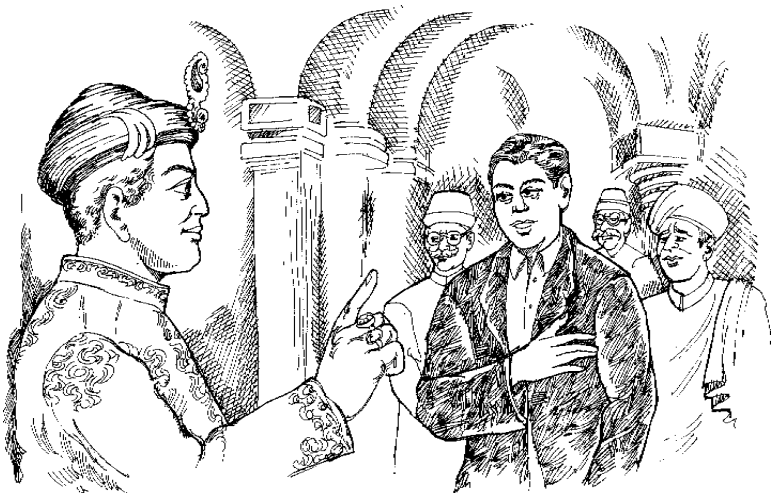

महाराजा सयाजीराव गायकवाड जी के साथ

सूबेदार रामजीराव के निधन पर विलाप करते भीमराव और रमाबाई

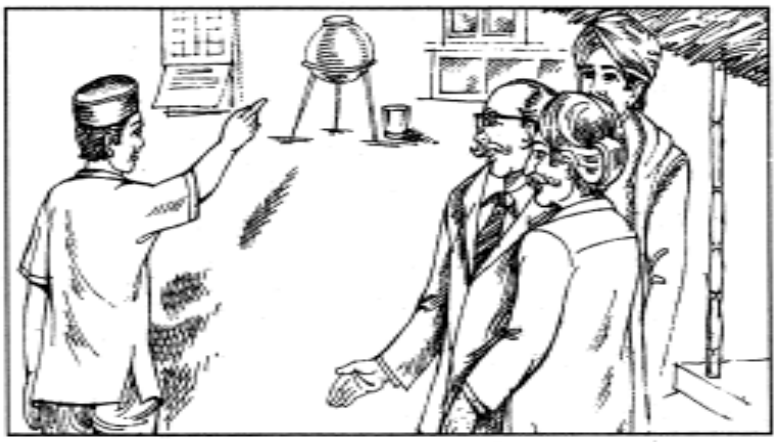

अध्यापन के कार्य के समय भी उन्हें कॉलेज में सार्वजनिक स्थान से जल न लेने का निर्देश

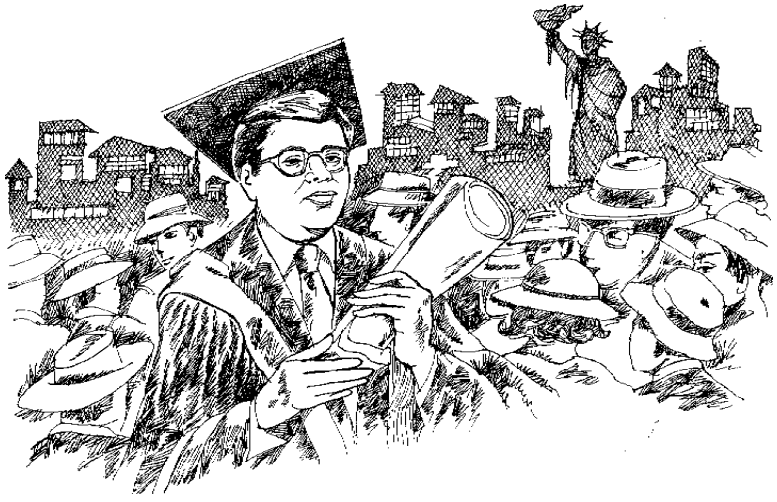

अमेरिका में डिग्री लेते हुए

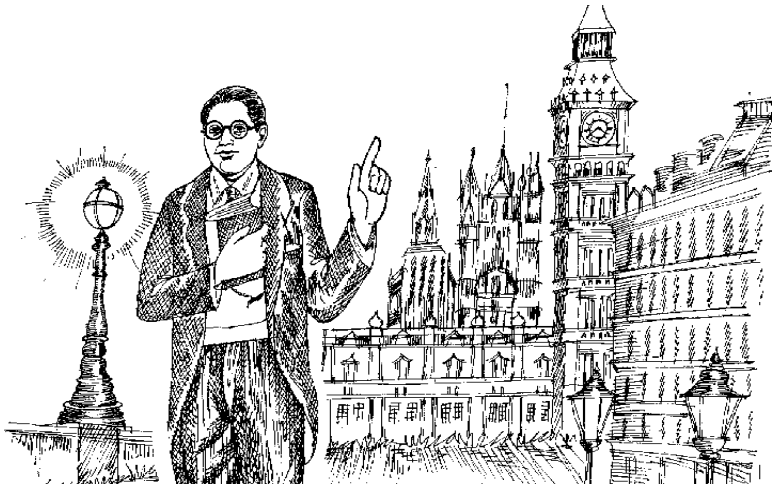

के लिये लण्डन् में

महाद सत्याग्रह

गोलमेज सम्मेलन

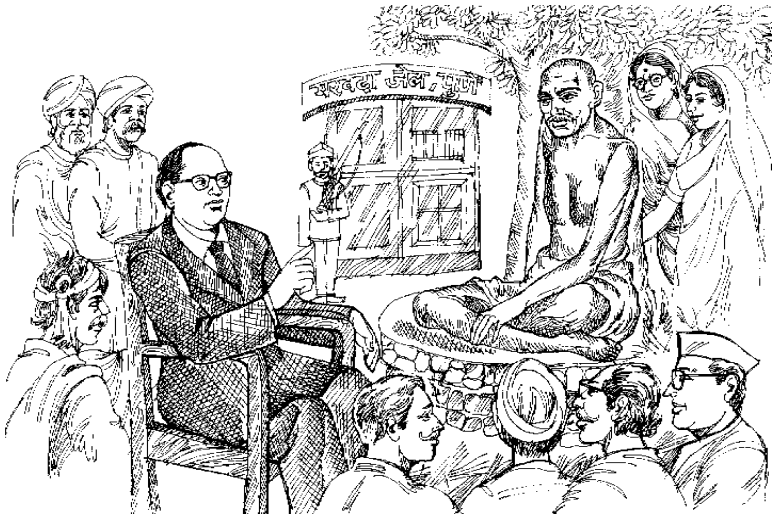

यरवदा जेल में गांधी जी से बात करते

संविधान प्रस्तुत किया

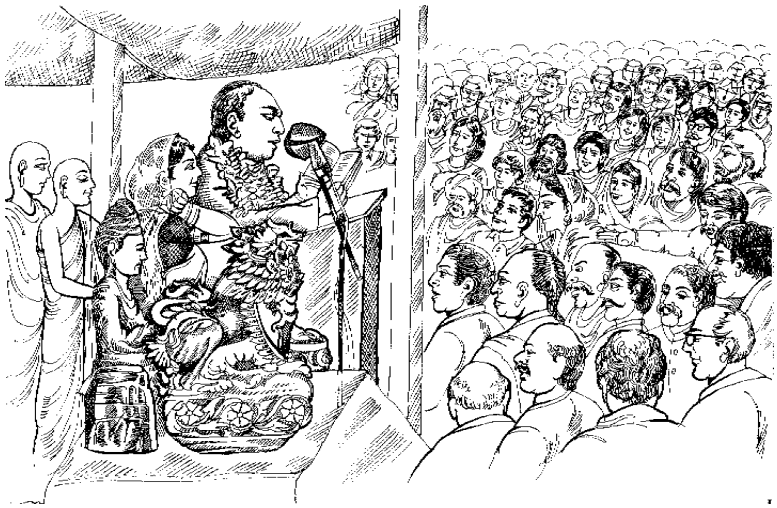

नागपुर में सार्वजनिक दीक्षा